No. 1 2021 Stiftet 1988

SPEIL दर्पण

Pris 25 kr

अंक १ २०२१ स्थापित १९८८

Et flerkulturelt magasin på hindi og norsk

हिन्दी और नार्वेजीय भाषा का बहुसांस्कृतिक द्वैमासिक

२२ जुलाई को कभी नहीं भूलेंगे! Vi aldri glemmer 22. juli.

आज सरकारी क्वार्टर और AUF के ग्रीष्मकालीन शिविर पर आतंकवादी हमले को दस साल हो गए हैं।
७७ लोग मारे गए थे। कई गंभीर रूप से घायल हो गए। हम कभी नहीं भूलेंगे।

I dag er det ti år siden terrorangrepet mot regjeringskvartalet og AUFs sommerleir på Utøya.
77 mennesker ble drept. Mange ble hardt skadd. Vi glemmer aldri.

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

भारत का ७५वां स्वतंत्रता दिवस राजदूत बी. बाला भास्कर के निवास, ओस्लो में मनाया गया।

India feirer sin 75. uavhengighetsdag den 15. august på Indiske ambassadørboligen i Oslo.

Speil दर्पण

Speil er et flerkulturelt magasin på norsk og hindi. Vi presenterer viktige nyheter både fra India og Norge for våre lesere.

Formålet vårt er å øke forståelse og kontakt mellom mennesker og kulturer.

Speil er et talerør for kulturarbeidere i Norge, uansett etnisk bakgrunn. Vi ønsker alle velkommen til å skrive i Speil-दर्पण. Har du noe å bidra med, spørsmål, ideer eller lignende? Ta kontakt med oss på speil.nett@gmail.com

Støtteabonnement for Speil er 100,- pr år.

Løssalgspris 25 kr

Bankgiro : 6072 05 14969

Ansvarlig Redkatør
(Editor) सम्पादक:
Suresh Chandra Shukla
Redaksjon (Editorial board)
सम्पादक मण्डल:
Harald Burvald, Torstein Winger
Sangita Shukla,
Sigrid Marie Refsum,
Maya Bharti,
Rupinder Singh Dhillon
Guru Sharma

India
Om Sapra (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow)

Canada
Dr. S. K. Sethi

Nederland
Dr. Mohan Kant Gautam

E-mail: speil.nett@gmail.com
Phone: (47) 22 25 51 57
Address:
Post Box 31, Veitvet
0595 Oslo, Norway

I dette nr. इस अंक में

हिन्दी Hindi

- **स्तम्भ**

सम्पादकीय ५
सम्पादक के नाम पत्र ६

- **लेख और समाचार**

नार्वे से अर्पित किए गए प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद सम्मान - संगीता शुक्ला ८
सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' : एक सजग कथाकार - बलराम अग्रवाल ९
कहानियों की भीड़ में नई कहानियां - सिद्धार्थ बल्लभ १३
दाउ जी गुप्त के चाहने वाले हर देश और लखनऊ के हर मोहल्ले में - सुरेशचन्द्र शुक्ल १४
लॉकडाउन की कविताएँ - पवन कुमार रावत १६
भ्रष्टाचार, गरीबी और अशिक्षा बड़ी समस्याएं - सुरेशचन्द्र शुक्ल १९
डॉ. महेश दिवाकर को साहित्य भूषण सम्मान २०
जरवा औरत के बहाने - डॉ. सुनिता मच्छिंद्र मोटे २१
विश्व का सबसे बड़ा कवि सम्मेलन २३
यूरोप में डिस्पोजल प्लास्टिक पर प्रतिबंध २५

- **कहानी**

वसन्त के अंकुर - सुरेशचन्द्र शुक्ल ११

- **हास्य व्यंग्य**

क्योंकि सूत भी कभी कपास था - सूर्यकुमार पांडेय १०

- **पुस्तक समीक्षा**

कहानियों की भीड़ में नयी कहानियां - सिद्धार्थ बल्लभ १३
यादों के इंद्रधनुष - ओम सपरा २४

- **कवितायें**

दिल के मरीज़ - इन्द्र खोसला 'तन्हा' १०
नदी - डॉ. राम प्रवेश रजक १३
मन का पंछी - अनुपमा २०
धर्म-मुफ्त में लूटने की दुकानें हैं - डॉ. आर.बी. गौतम २२
बच्चे - संगीता शुक्ला २३
इला श्री जायसवाल की दो कवितायें २५
शिवम् तिवारी की दो कवितायें २६
विषमता की मक्खी - निर्मल ब्रह्मचारी २६
शरण - गुरू शर्मा २६
शोभा बाजपेयी की चार कविताएं २७
लॉकडाउन - प्रोमिला देवी २८
अस्तित्व - सुवर्णा जाधव २९
इंसानियत - एस. डी. तिवारी २९
तलाश भाले वाले की - सूर्य कुमार पांडेय २९
डा. गंगा प्रसाद 'गुणशेखर' की दो कवितायें २९

Norsk (Norwegian) नार्वेजीय

- **Faste spalter**

Leder 5
Lederbrev 6

- **Artikler og informasjon**

Regjeringen fortsetter gjenåpningen
Retur, utvisning og bortvisningen fra Norge 31
Tilpasser innreisekarantenereglene for film- eller serieproduksjoner 34
Koronasituasjonen 35
En normal skolehverdag 36
Justeringer i trinn 4 - iverksettes ikke nå 38
Endringer i innreiserestriksjoner, karantenekrav og krav om karantenehotell for flere land og områder 39
Hva er stortingsvalg? 44

- **Tekst og dikt**

T-BANE TANKER av Nuri Røsegg 30
Rosa - Inger Marie Lilleengen 30
Feil tid - Suresh Chandra Shukla 30
Ler Budha Av Meena Murlidharan 30

Speil दर्पण

सम्पादक Redaktør
सुरेशचन्द्र शुक्ल
Suresh Chandra Shukla

सम्पादक मण्डल: Redaksjon

Harald Burvald
Torstein Winger
Sangita Shukla
Sigrid Marie Refsum
Maya Bharti
Rupinder Singh Dhillon
Guru Sharma

सलाहकार: Adviser / Rådgiver

Trygve Tveter, Advokat

Redaksjon i India
भारत में

Prof. (Dr.) Santosh Kumar Tewari
Hari Singh Pal (New Delhi)
Kripa Shankar (New Delhi)
Jai Prakash Shukla (Lucknow).
Shivram Pandey (Lucknow)
Dr. Vinay Kumar Sharma (Lucknow)
Om Sapra (New Delhi)
Dr. Vikram Singh
Dr. Shobha Bajpai
Ila Shri Jaiswal
Dr. S.K. Sethi (Canada)

Nedarland
Dr. Mohan Kant Gautam

Distributor in India भारत में
Sanjay Mishra (Sanju Mishra)

Våre kilder हमारे श्रोत

India भारत
Rameshvar Mishra, Shanti Niketan
Ubbaidur Rahman Hashmi, New Delhi
Harmahinder Singh Bedi, Amritsar
Nirmala S Mourya, Chennai
Anand Sharma, Lucknow
Birendra Kumar Shukla,
Lalganj, Raebareli

Sverige स्वीडेन :
Ashutosh Tiwari
Anupama Pathak

Danmark डेनमार्क :
Deshbandhu Charanjiv Kumar

Tyskland जर्मनी :
Dr Indu Prakash Pandey
Dr Ram Prasad Bhatt
Samta Malhotra

Storbritannia ब्रिटेन :
Vijay Rana

Canada कनाडा:
Neerja Shukla
Manish Kumar Mishra

Sør Afrika दक्षिणी अफ्रीका :
Rambhajan Sitaram

USA यूएसए :
Sher Bahadur Singh
Dr. Raj Gupta
Swarna Mishra

Leder

India feirer sin 75. uavhengighetsdag 15. august 2021

Indias uavhengighetsdag er viktig da den står som en påminnelse om ofringene som mange frihetskjempere gjorde for å få uavhengighet fra britisk styre.

India feirer sin 75. uavhengighetsdag 15. august 2021 med vanlig stolthet for å markere sin frihet fra britisk styre. Den indiske uavhengighetsbevegelsen begynte under første verdenskrig. Noen av de store frihetskjemperne som hjalp til i Indias frihetskamp inkluderer Mahatma Gandhi, Jawaharlal Nehru, Sardar Vallabhbhai Patel, Bhagat Singh, Chandra Shekhar Azad, Subhas Chandra Bose og mange flere. 15. august 1947 fikk India sin frihet og avsluttet et nesten 200 år gammelt britisk styre.

Indias første statsminister Jawaharlal Nehru hevet det indiske nasjonalflagget over Lahori -porten til Red Fort i Delhi 15. august 1947. Det er en tradisjon som siden har blitt fulgt av den sittende statsministeren, etterfulgt av en adresse til landet.

Den første varianten av Indias nåværende nasjonale flagg ble designet av frihetskjemper Pingali Venkayya i 1921. Det nåværende flagget med safran, hvite og grønne farger og Ashok Chakra i midten ble offisielt vedtatt 22. juli 1947, og heist 15. august, 1947.

Suresh Chandra Shukla,
Redaktør

सम्पादकीय

भारत १५ अगस्त, २०२१ को अपना ७५वां स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

भारत ब्रिटिश शासन से अपनी स्वतंत्रता को चिह्नित करने के लिए सामान्य गर्व के साथ १५ अगस्त, २०२१ को अपना ७५ वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान शुरू हुआ। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मदद करने वाले कुछ महान स्वतंत्रता सेनानियों में महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभभाई पटेल, भगत सिंह, चंद्र शेखर आजाद, सुभाष चंद्र बोस और कई अन्य शामिल हैं। १५ अगस्त १९४७ को लगभग २०० साल के ब्रिटिश शासन को समाप्त करते हुए भारत को आजादी मिली।

भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने १५ अगस्त, १९४७ को दिल्ली में लाल किले के लाहौरी गेट के ऊपर भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया। यह एक परंपरा है जिसका पालन वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता है, इसके बाद देश के लिए एक संबोधन होता है।

भारत के वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज का पहला संस्करण १९२१ में स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकय्या द्वारा डिजाइन किया गया था। केसरिया, सफेद और हरे रंग के साथ वर्तमान ध्वज और बीच में अशोक चक्र आधिकारिक तौर पर २२ जुलाई, १९४७ को अपनाया गया था और १५ अगस्त १९४७ को फहराया गया था।

सुरेशचन्द्र शुक्ल
सम्पादक

Leserbrev
सम्पादक के नाम पत्र

(पुराना पत्र)
Dear Suresh Chandra ji,
I have to compliment you that for 20 years you have been working in Norway to bring together the culture in two countries.
The magazine 'Speil' has got readable material and I have always read it with interest.
Wherever you have gone, people have honoured you and given you best regards. The latest issue of Speil is also highly readable and the article on Obama is very good.
With warm personal regards,
Yours sincerely,
D.N. Malhotra
Hind Pocket Books, New Delhi, India

Dear Suresh Chandra Shukla Jee

It is a very pleasant surprise to hear from you after such a long time. I am glad that you remembered me. I wish you, your family and all the Indian Community in your contacts a happy, prosperous and peaceful new year.
My address is:
Virendra Sharma MP;
House of Commons, London SW1A OAA, UK
I look forward to seeing you.
Best wishes.
Virendra Sharma, 2020

I had the opportunity to meet Shri Suresh Chandra Shukla during my occasional visits over the years to Oslo. I found in Shri Shukla deep commitment to share the language, culture, music, poetry of the various hues of India. Shri Shukla has done a commendable job by bringing an informed perspective on India, its diversity, its abiding faith in universal values of love, secularism, rich tradition of practicing democracy through the publication of the magazine in Norway 'Speil'.
Sudhanshu Joshi
Executive Director
Internatioanl Center on Child Labor and Education
Washington, DC 20006, USA

नमस्कार शुक्ला जी

Speil दर्पण की ३३वीं वर्षगांठ पर हार्दिक शुभकामनाये! सन १९८८ से लगातार आप पत्रिका के माध्यम से भारतीय और नार्वेजियन के बीच एक सेतु का काम कर रहे है। SPEIL दर्पण के माध्यम से भारत और नॉर्वे के साथ-साथ पूरे विश्व की मुख्य घटनाओं की जानकारी के साथ-साथ रचनात्मक लेख, कविताएं, कहानियां आदि भी पत्रिका को रोचक बनाती रही है ! भारत से मैं १९८० में आया था उस समय कोई भी ऐसी पत्रिका नहीं थी जो कि भारतीय समाचारों की जानकारी दे सके! आपकी पहली पत्रिका भी २ अक्टूबर १९८८ को गाँधी जयंती पर प्रकाशित हुई थी उस समय से अब तक Speil दर्पण लगातार प्रकाशित होती रही! आपके इस योगदान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और शुभकामनाये !

गुरु शर्मा
फ्रेडरिक्साद, नॉर्वे

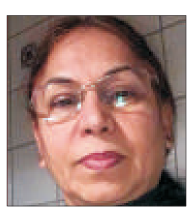

स्पाइल-दर्पण पत्रिका हमेशा पढ़ती हूँ। इसमें छपे लेख, कवितायें और कहानियाँ मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। इसमें नार्वे में भारतीयों के सांस्कृतिक गतिविधियों की जानकारी बहुत अच्छी होती है। इसमें आप हास्य-व्यंग्य रचनाएं या चुटकुले आदि भी प्रकाशित कीजिये। हमारी शुभकामनाएं पत्रिका के साथ है।

अलका भरत, ओस्लो, नार्वे।

स्पाइल-दर्पण में अच्छी सांस्कृतिक रचनाएं छपती है और साहित्य के साथ-साथ फिल्मों की जानकारी भी बहुत अच्छी होती है। स्पाइल पत्रिका लखनऊ में थिएटर और लघु फिल्म के क्षेत्र में मिलकर सेमीनार आयोजित करती है और युवाओं को प्रोत्साहित करती है यह बहुत अच्छा कार्य है इससे देश विदेश में फिल्म और थिएटर को प्रोत्साहन मिलता है। हमारी शुभकामनायें स्पाइल-दर्पण के सुन्दर भविष्य के लिए है।

फिल्माचार्य आनन्द शर्मा,
लखनऊ, भारत

अभिनन्दन! आप लगातार हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कार्य कर रहे हैं। वर्षों से स्पाइल-दर्पण नामक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं। समय-समय पर अनेक सांस्कृतिक और साहित्यिक आयोजन करते हैं जिसमें भारतीय मूल के लोग ही नहीं भारतीय दूतावास के अधिकारी भी सम्मलित होते हैं। हालांकि आप अपना कर्तव्य समझकर ऐसा करते हो लेकिन राजकीय संस्थानों ने विदेश में रहते हुए आपके द्वारा की जा रही हिंदी सेवाओं का सही मूल्यांकन नहीं किया गया।

डॉ. विनोद बब्बर,
सम्पादक, राष्ट्र किंकर, नयी दिल्ली, भारत

प्रियवर डॉ शुक्ल जी
स्पाइल-दर्पण के अंक निरन्तर मिल रहे हैं। आभारी हूँ।

विश्व मंगल की कामना लिए यह पत्रिका विश्ववाणी हिंदी के माध्यम से सामयिक समाज का आईना सिद्ध हो रही है। भारत-नॉर्वे के रिश्तों को किसी अन्य भाषा के बजाय सीधे हिंदी और नार्वेजियन भाषा के जरिये मजबूती देने का यह उद्यम अनूठा और अनुकरणीय है। पत्रिका के

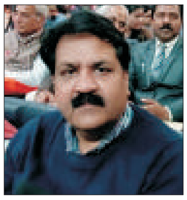

कलेवर और पाठ्य सामग्री में निरन्तर निखार आ रहा है। हाल के अंक में आपने हिंदी जगत के विस्तार और व्याप्ति को प्रभावी ढंग से साकार किया है, एतदर्थ मेरी ओर से बधाइयाँ और स्वस्तिकामनाएँ स्वीकार करें।

आपका
प्रो शैलेन्द्रकुमार शर्मा
अध्यक्ष, कला संकाय एवं कुलानुशासक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ४५६०१० (म.प्र.)

लन्दन बुक फेयर में स्पाइल (दर्पण) पत्रिका देखने को मिली। भारतीय संस्कृति एवं हिंदी भाषा के प्रचार- प्रसार को समर्पित इस पत्रिका को देखकर बहुत खुशी हुई। श्री शुक्ला जी वर्षों से भारत और नार्वे के बीच एक सांस्कृतिक सेतु का कार्य बखूबी कर रहे हैं। हमारी ढेर सारी शुभकामनाएँ।

कुमार विक्रम
सम्पादक, अंग्रेजी
नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया
लन्दन बुक फेयर, १५ मार्च २०१७

आज पहली बार शुक्ला जी से मेल हुआ। इसके साथ-साथ उनकी पत्रिका स्पाइल-दर्पण पर सरसरी नजर डालने का अवसर प्राप्त हुआ।
वास्तव में यह पत्रिका भारत और नार्वे के मध्य सम्बन्ध मजबूत करने में अपना अहम रोल अदा कर रही है। इसके लिए शुक्ला जी को बहुत-बहुत बधाई। आप प्रगति के पथ पर बढ़ते रहें।

शुभकामनाओं सहित
अरुणा सबरवाल, कहानीकार, लन्दन, यू. के.

(पुराना पत्र)
आदरणीय शुक्ल जी, सादर अभिवादन
यह हम सभी के लिए यह अत्यन्त ही गौरव की बात है कि इस वर्ष का नोबेल पुरस्कार अपने देश

के 'बचपन बचाओ आंदोलन' के संस्थापक आदरणीय श्री कल्याण सत्यार्थी जी को बच्चों के सुन्दर भविष्य के लिए संघर्ष करने के लिए दिया गया। वास्तव में हम सभी का यह दायित्व बनता है कि हम दुनिया भर के २.४ अरब बच्चों के साथ ही आगे आने वाली पीढ़ियों के सुन्दर भविष्य के लिए सतत् प्रयास करते रहें।

आपके पत्र के माध्यम से हमें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप २१ अक्टूबर की शाम से २३ अक्टूबर की शाम तक लखनऊ में रहेंगे। हम १२ स्टेशन रोड पर आपका हार्दिक स्वागत करते हैं। कृपया यहां आने से पूर्व अपने आने की सूचना ई-मेल info@cmseducation-org पर या मेरे मोबाइल नम्बर ९४१५० १५०३० पर देने की कृपा करें ताकि हम आपका स्वागत कर सकें। नार्वे में आपके साथ बिताये गये प्रत्येक क्षण अविस्मरणीय बन गये हैं।

सम्मान सहित,
आपका डा. जगदीश गाँधी
Lucknow, १४.१०.१४

स्पाइल में कवितायें बहुरंगी होती हैं।

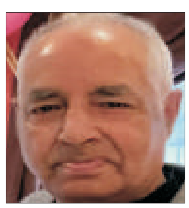

हम लोग जो नार्वे में रहते हैं उनके लिए अपनी संस्कृति और भाषा जरूरी है जो हमको और हमारी आने वाली पीढी से जोड़ती है इसमें पत्रिका, रेडियो आदि का बहुत योगदान होता है इसीलिए स्पाइल-दर्पण को हम जब से निकलती है तबसे एक दो वर्षों को यदि छोड़ दें तो हमेशा पढ़ते रहते हैं।

सुरेशचंद्र शुक्ल के लेख बहुत अच्छे हैं। जिससे हिंदी के विकास और विस्तार के बारे में पता चलता है।

पिछले अंक में नोबेल पुरस्कार, नार्वे में हिंदी, कहानियों में प्रियम्बरा की कहानी मृग मरीचिका, शरद आलोक की विदेशी माल, प्रेमचंद की राष्ट्र का सेवक बहुत अच्छी लगीं। इससे नार्वे के बारे में बहुत सी जानकारी भी मिलती है। सभी को मैं अपने परिवार की तरफ से नव वर्ष की मंगलकामनायें देता हूँ।

पत्रिका में कवितायें बहुरंगी होती हैं। कुशल सम्पादन के लिए बहुत बहुत बधाई।

बासदेव भरत, ओस्लो, नार्वे।

अमीर लोग अपना योगदान दें तभी भारत आगे बढ़ेगा

जो अमीर लोग हैं वे केवल अपने बारे में सोचते हैं उनको चाहिए कि वे गरीबों को जो गरीबी रेखा से उनको रोजगार देकर गरीबी से निकालना चाहिये इससे भारत मजबूत होगा और देशभक्ति बढ़ेगी।

यह भी जरूरी है कि नौजवान पीढी के लिए कारीगर बनाने के लिए उन्हें प्रशिक्षित श्रमिक बनाने के लिए शिक्षा में भी योगदान दें। इन गरीब लोगों को प्रोद्योगिक शिक्षा देकर रोजगार के लिए प्रोत्साहन मिलेगा। इनको नौकरी मिलेगी। तभी भारत का नक्शा बदल जायेगा।

हमको ईमानदारी और सच्चाई से चलना होगा। मैं आपके स्पाइल-दर्पण पत्रिका के लिए आपके द्वारा नार्वे में किये कार्यों की बहुत ईज्जत करता हूँ।

चरण सिंह सांगा, ओस्लो, नार्वे

अपनी जड़ों से जोड़े रहने की भूमिका

स्पाइल-दर्पण का योगदान हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सराहनीय रहा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि इसी प्रकार यह पत्रिका निरंतर प्रवासी भारतीयों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहे और उन्हें अपनी जड़ों से जोड़े रहने की भूमिका निभाने में सक्रिय रहे। यह पत्रिका केवल नार्वे में ही नहीं, भारत में और विश्व के सभी देशों में अपनी पहचान बनाते हुए सम्पादन के श्रम को सार्थक करती रहे।

डॉ. विद्याविंदु सिंह,
लखनऊ

नार्वे से अर्पित किए गए प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद सम्मान

संगीता शुक्ला

कथा, कविता, आलोचना, रंगमंच, व्यंग्य और साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान के लिए अर्पित किए गए प्रेमचंद अंतरराष्ट्रीय सम्मान।

प्रेमचंद जयन्ती पर ३१ जुलाई २०२१, शनिवार को भारतीय-नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम, नार्वे एवं द्विभाषी पत्रिका स्पाइल-दर्पण द्वारा अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद सम्मान अर्पित किए गए। यह सम्मान कथा, आलोचना, व्यंग्य, रंगमंच और साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में विशिष्ट अवदान के लिए दिए गए। सम्मानित साहित्यकारों प्रमुख रूप से वरिष्ठ कथाकार काशीनाथ सिंह, वाराणसी, नासिरा शर्मा, बलराम, वरिष्ठ कवि एवं अनुवादक कुलदीप सलिल, नई दिल्ली, समालोचक प्रो शैलेंद्र कुमार शर्मा, उज्जैन, कुलपति प्रो. निर्मला एस मौर्य, जौनपुर, व्यंग्यकार डॉ. प्रेम जनमेजय, नई दिल्ली आदि सम्मिलित थे। ये सम्मान उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव श्री राजेंद्र कुमार तिवारी, लखनऊ एवं संस्था के अध्यक्ष और वरिष्ठ साहित्यकार सुरेशचन्द्र शुक्ल शरद आलोक ने अर्पित किए। विशिष्ट अतिथि ओस्लो के पूर्व टाउन मेयर थूरस्ताइन विंगेर, ओस्लो, नार्वे में भारतीय दूतावास में प्रथम सचिव श्री इंद्रजीत सिंह, डॉ. दिनेश चंद्र अवस्थी, लखनऊ, प्रोफेसर मोहनकांत गौतम, नीदरलैंड, प्रो अवनीश कुमार, प्रो रिपुसूदन सिंह, लखनऊ, डॉ. दीपक पांडेय, नई दिल्ली आदि थे। पुरस्कार अलंकरण समारोह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर आयोजित किया गया, जिसका यू ट्यूब पर जीवंत प्रसारण किया गया।

कथा साहित्य और कविता के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद सम्मान

कथाकार काशीनाथ सिंह, नासिरा शर्मा, बलराम, शिवमूर्ति, बलराम अग्रवाल एवं कुलदीप सलिल को अर्पित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद आलोचना सम्मान

प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. निर्मला एस मौर्य, कामता कमलेश, डॉ. मिथिलेश दीक्षित, डॉ. कामराज सिंधु और डा. हरिशंकर मिश्र को अर्पित किया गया।

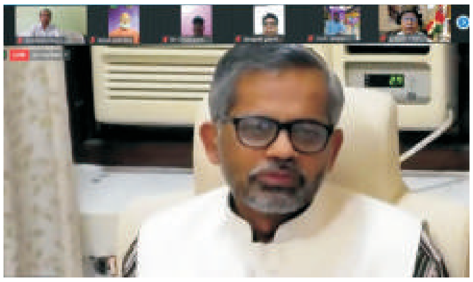

मुख्य अतिथि राजेंद्र कुमार तिवारी,
मुख्य सचिव उत्तर प्रदेश

अंतरराष्ट्रीय व्यंग्य सम्मान

प्रेम जनमेजय, डॉ. हरीश नवल, और सूर्य कुमार पाण्डेय को अर्पित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद रंग सम्मान

फिल्माचार्य आनंद शर्मा, आभा शर्मा और अनिल मिश्र को अर्पित किया गया।

अंतरराष्ट्रीय प्रेमचंद साहित्यिक पत्रकारिता सम्मान

डॉ. अमिता दुबे, डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. कुंवर वीर सिंह मार्तण्ड, डॉ. विनोद कालरा, डॉ. दिनेश चंद्र अवस्थी, श्रीमती प्रतिभा सपरा, डॉ. हरिसिंह पाल, कृपाशंकर, संतोष श्रेयस, ओम सपरा, डॉ. अर्जुन पांडेय और डॉ. शोभा बाजपेयी को अर्पित किया गया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव श्री राजेंद्र कुमार तिवारी, लखनऊ ने सम्मानित साहित्यकारों को बधाई देते हुए कहा कि कोरोना संकट के कारण हम लोग भौतिक रूप में नहीं मिल पा रहे हैं, किंतु भविष्य में अवश्य एक दूसरे से मिलेंगे। मुंशी प्रेमचंद भारत के महानतम कथाकार थे। उनके उपन्यास और कहानियां गहरा प्रभाव डालते हैं। प्रेमचंद सामान्य मनुष्य की अनुभूतियों के चितेरे हैं। पंच परमेश्वर जैसी कहानियों के माध्यम से उन्होंने न्याय और मैत्री को महत्व दिया है। उनके संदेश आज भी प्रासंगिक हैं। नॉर्वे के साथ भारत के गहरे सांस्कृतिक संबंध हैं। फोरम के माध्यम से श्री सुरेशचंद्र शुक्ल विभिन्न देशों, संस्कृतियों और भाषाओं को जोड़ने का अनुपम कार्य कर रहे हैं। मैं नॉर्वे से प्रेमचंद अंतरराष्ट्रीय साहित्य अवार्ड से सम्मानित साहित्यकारों को बधाई देता हूँ।

सम्मान के प्रत्युत्तर में प्रोफेसर शैलेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि सभी सम्मानित साहित्यकार प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहेंगे। प्रेमचंद ने दशकों पहले किसान, स्त्री, दलित, बाल और वृद्ध जीवन के संबंध में जो संदेश दिए थे वे आज अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। वे भारतीय पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के अनुपम चितेरे हैं। संयुक्त परिवार के विघटन के साथ भारतीय संस्कृति के समक्ष कई चुनौतियां दिखाई दे रही हैं। आज के दौर में भी प्रेमचंद का साहित्य हमें नई रोशनी देता है।

देश-विदेश के सम्मिलित अतिथिगण

कार्यक्रम में नीदरलैंड से प्रो मोहनकांत गौतम, स्वीडेन से डॉ. आशुतोष तिवारी, सुरेश पांडे, अमेरिका से रामबाबू गौतम (न्यू जर्सी), अशोक सिंह (न्यू यार्क), जर्मनी से समता मल्होत्रा, भारत से डॉ. राम गोपाल भारतीय, डॉ. दिग्विजय शर्मा, डॉ. करुणा पांडेय, इला जायसवाल, शिवमंगल सिंह मंगल, डॉ. अनिल सिंह, हाशिमबेग मिर्जा, विजय कुमार राउत, प्रो. कृष्णा जी श्रीवास्तव और प्रो योगेंद्र प्रताप सिंह लखनऊ विश्वविद्यालय, डॉ. पुनीत बिसारिया, डॉ. वीरेंद्र सिंह यादव और अन्य विद्वतजन, लेखक और शोधार्थी जुड़े थे।

कार्यक्रम में दुनिया के अनेक देशों के साहित्यकार एवं संस्कृतिकर्मी मौजूद थे। कार्यक्रम के सूत्रधार फोरम के अध्यक्ष श्री सुरेश चंद्र शुक्ल शरद आलोक, ओस्लो, नॉर्वे थे।

आयोजक स्पाइल-दर्पण एवं भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम

भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम, नॉर्वे विगत तीन दशकों से भारत नॉर्वे के मध्य मैत्री और सांस्कृतिक सम्बन्धों को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। संस्था द्वारा दुनिया की पहली द्विभाषी पत्रिका स्पाइल दर्पण का प्रकाशन किया जाता है, जो हिंदी एवं नॉर्वेजियन भाषा में प्रकाशित होती है। संस्था द्वारा आगामी २ अक्टूबर को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय सम्मान अलंकरण समारोह का आयोजन किया जाएगा।

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' : एक सजग कथाकार

बलराम अग्रवाल

बलराम अग्रवाल

कबीर का दर्शन है कि मनुष्य का शरीर, 'पानी केरा बुदबुदा' यानी पानी के बुलबुले की तरह क्षणभंगुर है। लेकिन बुलबुले का स्वयं की उत्पत्ति का दर्शन कबीर के दर्शन से भिन्न क्षणभर में मिट जाने वाला नहीं है।

बुलबुले का जन्म पानी के भीतर की अशान्ति से होता है। अधिक समय तक जीवित रहने के लिए वह जन्मता ही नहीं है। वह तो मात्र इतना बताने के लिए जन्मता है कि पानी की सतह के नीचे - हलचल है। बुलबुले को पकड़ा नहीं जा सकता लेकिन उसे देखकर पानी के नीचे की हलचल को, उसके कारण को पकड़ा जा सकता है।

समकालीन लघुकथाएँ भी पानी के नीचे की हलचल को पहचानने और पकड़ने का प्रयास हुआ करती हैं। उनके कथानक के, शिल्प, शैली और शब्द-चातुर्य के आकर्षण में बँधकर रह जाना बुलबुले के सौंदर्य-आकर्षण में बँधकर रह जाने के समान क्षणभर का सुख देने वाला हो सकता है, गहन सुख तो तलहटी पर ही जाने पर मिलता है।

इस परिप्रेक्ष्य में आइए, शरद आलोक जी की कुछ लघुकथाओं पर विचार करते हैं। शरद जी गत अनेक वर्षों से साधनारत साहित्यकार हैं। उन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखन किया है। समाज की गतिविधियों पर उनकी कथा-दृष्टि का पैनापन उनकी लघुकथाओं में भी उभरकर आया है।

उनकी 'इंटरव्यू' शीर्षक लघुकथा समाज में सामान्यतः व्याप्त आस्था की कथा बयान करती है जिसे धर्मभीरुता भी कहा जा सकता है। इसके माध्यम से यह संदेश देने का अच्छा प्रयास है कि धर्मभीरुता मनुष्य की सफलता के मार्ग की सबसे बड़ी रुकावट है। अंत में रोहन का अपने आप पर गुस्सा उतारना उसका अपनी धर्मभीरुता पर ही क्षोभ प्रकट करना है।

लघुकथा 'लोकलाज' की अम्मा भी समाज के उसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो शैक्षिक रूप से पिछड़ा हुआ और मानसिक रूप से अत्यंत कमजोर है। अम्मा का बेटी से यह कहना कि 'हम गरीबी से तो एक बार फिर लड़ सकते हैं परन्तु धार्मिक लोकलाज के दिखावे को नजरअंदाज नहीं कर सकते।' इस तथ्य का द्योतक है कि हमारी अधिसंख्य आबादी आज भी धर्म का आडम्बर देखने-करने वालों की है। इस लघुकथा में बेटी आधुनिक, प्रगतिशील विचारों की प्रतिनिधि है जो अम्मा जैसी सुप्त और पिछड़ी मानसिकता को जगाने का लगातार प्रयास करती है।

सारी लोककथाएँ रोचक और जीवनदायिनी हैं

'दोहरा दान' को पढ़कर मुझे एक लोककथा याद हो आयी। सारी की सारी लोककथाएँ रोचक और जीवनदायिनी हैं, यह कहने में मुझे लेशमात्र भी संकोच नहीं है। यह भी कह सकते हैं कि समय की आँच में तपकर रोचक और जीवनदायिनी लोककथाएँ ही जीवित बची हैं, शेष सब राख हो गयीं। निःसंदेह, आज की लघुकथाओं के साथ भी समय की आँच यही बर्ताव करने वाली है। बहरहाल, उक्त लोककथा क्योंकि 'दोहरा दान' के रहस्य को उजागर करती एक संगत रचना है, इसलिए उसे उद्धृत करना भी समीचीन ही है। हुआ यों कि निरीह-सा एक मंगता सड़क पर भीख माँगता घूम रहा था। संयोगवश उसी समय आकाश-मार्ग से शिव-पार्वती उसके ऊपर से गुजर रहे थे। उसकी दीनता से द्रवित होकर पार्वती शंकर से बोलीं- "आप तो भोले भंडारी हैं। इस गरीब को भी कुछ दे दो।" शिव ने कहा- "इसके भाग्य में ब्रह्मा ने सम्पत्ति की रेखा नहीं बनायी है। मैं दूँगा, तब भी इसे नहीं मिल पायेगी।" पार्वती ने कहा- "आप दें तो सही। देखते हैं।" पार्वती की बात मानकर भगवान शंकर ने सोने के सिक्कों से भरी एक थैली उस रास्ते पर डाल दी, जिस पर वह भिखारी आगे बढ़ रहा था। चलते-चलते एकाएक उसके मन में विचार आया-'दुर्भाग्य से, अगर मैं अंधा हो गया, तब कैसे भीख माँगूँगा!' बस, यह विचार मन में आते ही, उसने आँखें बंद कीं और अंधे का अभिनय करते हुए भीख माँगने लगा। अंधेपन के इस अभिनय में वह शिवजी द्वारा सड़क पर डाली थैली को लाँघकर आगे बढ़ गया। भोले बाबा ने मुस्कुराते हुए माँ पार्वती से कहा- "देखा?" पार्वती ने कहा- "देखा भी और समझा भी।" यह लोककथा इतनी ही है, जिज्ञासा का तन्तु पाठक-मन में छोड़ती हुई कि भोले बाबा द्वारा सड़क पर डाली गयी सोने के सिक्कों से भरी उस थैली का क्या हुआ।

कोई कथाकार चाहें तो इसका विस्तार करते हुए बता सकते हैं कि क्या हुआ। शुक्ल जी ने अपने ढंग से बताया भी है। 'गाय के वास्ते' का केन्द्रीय कथ्य यह है कि-'आदमी भावना का पुतला होता है और आसानी से किसी के कहने-सुनने से भावना में बह जाता है।' जो पाठक कथा के इस केन्द्रीय कथ्य को नहीं पकड़ेंगे, वे कथा के मूल उद्देश्य को भी बामुश्किल ही पकड़ पायेंगे। दया-भाव छोड़कर मनुष्य आखिरकार एक नये व्यवसाय से जुड़ जाता है, यह इन्सानी फितरत है । इसी ओर संकेत करते हुए शुक्ल जी ने लिखा है- "मैंने गोहार लगाना बंद नहीं किया था। मेरे साथ सब्जी वाला भी गोहार लगा रहा था," गाय के वास्ते। "यहाँ सब्जी वाले की गोहार में गाय के प्रति श्रद्धा-भाव है जबकि कथा-पात्र 'मैं' की गोहार श्रद्धा-भाव से इतर कहीं और इशारा कर रही है।

'आम आदमी' एक उत्कृष्ट कथ्य है, लेकिन इसकी कसावट में कमी है। इस कमी को इस दृष्टि से कि लेखक दशकों से सुदूर विदेश में रहकर भी हिन्दी साहित्य की सेवा में जुटा है, कुछ हद तक नजरअंदाज किया जाना चाहिए; हालाँकि

नजरअंदाज करने का यह कोई तार्किक और मजबूत आधार सिद्ध नहीं होता है। बहरहाल, कथ्य की उत्कृष्टता पर बात करते हैं। वर्तमान स्थिति यह है कि अपनी अथवा अपने क्षेत्र की किसी समस्या से पीड़ित आम आदमी अपने क्षेत्र के एम.एल.ए, एम.पी. आदि के पास जाकर बड़ी आशा से गुहार लगाता है। बदले में विधायक और सांसद यहाँ तक कि उनके चपरासी द्वारा बदस्तूर उसकी अवहेलना की जाती है। कथा के माध्यम से कथाकार कहता है कि भावी स्थिति यह होगी कि आम आदमी उनकी ओर से पीठ फेर चुका होगा और कभी हाथ नहीं आयेगा।

'रौब' को बहुत-सी गम्भीर स्थितियों से जुड़कर आगे बढ़ने वाली हास्य और व्यंग्य कथा कहा जा सकता है। इसका केन्द्रीय भाव 'लोकलाज' से भी कहीं न कहीं मिलता है। ....जारी है।

'अंतिम समिधा' का कथानक विशुद्ध रूप से आज के समय से उठाया है और हल्की-सी शैल्पिक लापरवाही के बावजूद उसका प्रस्तुतिकरण प्रभावित करता है। इन कुछेक लघुकथाओं के आकलन से रचनाकार शरद आलोक की सकारात्मक और प्रगतिशील कथा-दृष्टि का परिचय मिलता है। उनकी लघुकथाओं में विषय वैविध्य तो है ही, शिल्प और शैली में भी मौलिकता है। किसी साहित्यकार ने अगर स्वयं अपने भी शिल्प और शैली को बार-बार नहीं अपनाया है तो इसे उसकी लेखकीय सजगता ही माना जाना चाहिए। इसके लिए भी शरद आलोक जी को बधाई।

दिल के मरीज़

इन्द्र खोसला 'तन्हा'

कहते हैं पीना छोड़ दो दिल के मरीज़ हो
जख्मों को सीना छोड़ दो दिल के मरीज़ हो

हर बात उनकी 'तन्हा' अगर मानता गया
कह देंगे जीना छोड़ दो दिल के मरीज़ हो

क्योंकि सूत भी कभी कपास था

सूर्यकुमार पांडेय

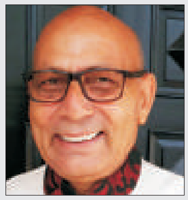

'कुल कितने टीचर मेरे मंत्रालय के अधीन हैं?'

-नए-नए परिवर्तित मंत्री अपनी मिनिस्ट्री की प्रथम औपचारिक बैठक में विभागीय अधिकारियों के रू-ब-रू थे।

'मान्यवर, हमारे मंत्रालय में टीचर नहीं, बुनकर होते हैं।'-विभाग के सचिव ने सफाई जैसा कुछ पेश करते हुए उत्तर दिया।

'ओह, मैं तो भूल ही गया था कि अब मैं 'टेक्स्ट' वाले मंत्रालय के स्थान पर 'टेक्सटाइल' वाले विभाग का मंत्री हूँ। सॉरी, वेरी सॉरी।'-मंत्री जी बिना झिझक वाली स्टाइल में झेंपते हुए बोले।'

दरअसल, हाल ही में मंत्री जी से उनका शिक्षा वाला मंत्रालय वापस लेकर उन्हें कपड़ा मंत्रालय का कार्यभार थमा दिया गया था। इंसान की आदतें जाते-जाते जाती हैं। मंत्री जी तो खैर सुपर इंसान थे। इसलिए अपनी आदतों से मजबूर थे।

"ये कपड़ा बुनने वाले, आई मीन, बुनकर अपने घर से खाना खाकर आते हैं, या फिर इनके लिए मंत्रालय ही मध्याह्न भोजन की व्यवस्था करता है!"- मंत्री जी ने अगला प्रश्न किया।

"सर, हमारे यहाँ अभी मिड-डे मील का प्रावधान नहीं है।" एक अधिकारी बोला।

"जी, अभी ऐसे इंतजामात मात्र शिक्षा विभाग में ही उपलब्ध हैं। हमारे यहाँ 'मील' नहीं, 'मिलें' होती हैं।"-एक और विभागीय अधिकारी ने पहले अधिकारी की बात को पूर्णता दी।

"फिर तो कोई ड्रेस-कोड भी लागू नहीं होगा।"- मंत्री जी ने शंका की।

"जी, नहीं सर। ज्यादातर बुनकर लोग लुंगी-बनियान पहनकर हैंडलूम चलाते हैं।"-पीछे से आवाज आई।

"गोया, अभी इस मंत्रालय में तमाम सुधारों की आवश्यकता है। एक-एक धागे को दुरुस्त करना होगा।"- मंत्री जी तमतमाते हुए बोले, "मुझे चुनौतियाँ पसंद हैं। वैसे भी, मैंने अपने पिछले वाले मंत्रालय में उच्च शिक्षण संस्थानों के एक-से-एक काबिल लोगों की बखिया उधेड़ कर रख दी थी।"

बैठक में सन्नाटा पसर गया। अधिकारी अपने-अपने दिमागों में नाना प्रकार के ताने-बाने बुनने लग गए। उन्हें स्वयं की कुर्सियों की सीवनें उधड़ती हुई-सी प्रतीत होने लगीं।

वे सभी पहले से ही मंत्री जी के तेवरों से भिज्ञ थे। उन्हें पता था, मंत्री जी 'कहानी घर-घर की' से चलकर 'कहानी घर्र-घर्र की' वाले इस ओहदे तक पहुँचे थे। वे अपने हथकरघे पर मशीन जैसा कपड़ा कातने की कला में भी पूर्ण निष्णात थे।

बसन्त के अंकुर

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

उपवन में नये-नये सुमन खिले और मुर्झा जाते। बीज, अंकुर, कोपल-कलि-पुष्प और फल संभवतः यही जीवन के आयाम हैं। फूलों की क्यारियाँ लहलहाती। कंटीली झाड़ियों घिरा मन मुग्ध करने वाला रंग-बिरंगे फूलों का बगीचा। रमा हजारे से क्यारियों पर जल बरसाती। असमान नन्हें-मुन्ने पौधे जल के दबाव से झुक जाते, पुनः यथास्थान पर लौट आते। हरे-हरे कोपलों और कलियों के मध्य टिकी जल की बूँदे मोती सी चमक उठती।

रमा घर से कालेज, कालेज से घर। घर में रसोई से बैठक और उपवन के मध्य घिरी रहती। अध्यापिका के साथ वह एक कुशल चित्रकार भी है। घर पर वह ही भाई-बहनों में बड़ी है।

उसके पिता जब देखो रमा की प्रशंसा करते न थकते थे। वह रमा से अकसर कहते,-"रमा तुम कितनी होनहार हो। बड़े लड़के की तरह घर को कैसा संभाला है।" बात भी कितनी सटीक थी। घर में छोटी तीन बहने और दो भाई। सबसे छोटी बहन तो अभी माँ की गोद में ही थी। उससे बड़े-बड़े दो भाई क्रमशः तीन और चार वर्ष के थे। मंझिली बहन ऊषा जो १६वें में पड़ी थी। ऊषा ने जब से बी.ए. में दाखिला लिया है, घर पर एक पाँव रूकती नहीं। चाहे बिस्तरी चाय हो या रात्रि का भोजन, रमा ही घर का सारा कार्य करती थी।

एक दिन रमा के पिता अपने मित्र से सदा की भांति प्रशंसा करने लगे-"खाना तो बस रमा ही बनाती है। वाणी में तो सरस्वती है, ये जो आप देख रहे हैं, मढ़े हुए कलात्मक चित्र ये सब रमा बेटी ने ही बनाये हैं।" तभी रमा अतिथि कक्ष में आयी, मेज पर चाय रखते हुए उसने प्रणाम किया मदन जी को।

"रमा की अभी तक शादी नहीं हुई?" मदन जी ने प्रश्न किया।

"अरे कितनी गुणी है हमारी रमा। संगीत, चित्रकला, प्रकृति प्रेम, साहित्य आदि कितने खजाने है इसके पास। मदन अमित के वाक्यों को अपने कान पर चिपकाते चले जा रहे थे। विस्मय की टेढ़ी-मेढ़ी रेखा अधरों पर खिंच गयी थी सुड़क कर पी रहे चाय का स्वर शान्त हो गया था। चाय के प्याले को मेज पर टिकाते हुए मदन ने पुनः प्रश्न किया।

"आप बुरा न माने, जब बड़ी लड़की का विवाह हुआ नहीं। तो फिर अप छोटी लड़की ऊषा का विवाह क्यों करना चाहते हैं?

"अरे मदन जी छोटी को क्या? न काम की न काज की नौ मन अनाज की। मेरी बड़ी लड़की हीरा है, हीरा। इसके योग्य लड़का ही नहीं मिलता।" उसके पिता अमित ने उत्तर दिया।

रमा फुलवाड़ी में देखती। जो फूल सुबह मुस्करा रहे थे, उनमें से कुछ टूट कर नीचे गिर पड़े हैं। कुछ मुरझा गये हैं। कुछ कलियाँ कच्ची हैं। और कुछ कलियाँ खिलने को हैं। गेंदा गुलाब, फूलमटर, बरबीना, फ्लाक्स, गुलदउदी की कतार-बद्ध क्यारियाँ मुस्कराती। साथ ही रमा भी मुस्कराने का प्रयास करती।

ऋतुएं आती और चली जाती। परन्तु जब बसन्त आता तो वह बेचैन हो उठती। तीस बसन्तों की वायु हिलोरें आयी, परन्तु वह टस से मस न हुई वह अपने जीवन के तीस वर्ष बिता चुकी थी, परन्तु उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे वह एक काल जी चुकी है। कालेज में जब वह अपनी छात्राओं को काली दास की शकुन्तला पढ़ाती तो उसे प्रतीत होता जैसे वह भी किसी की प्रतीक्षा में हो।

आज से सात वर्ष पहले जब रमा का सहपाठी दीप जो रमा के कालेज में अध्यापक था, रमा से अपनी शादी की बात करने उसके पिता के पास आया था। उसके पिता को पेन्शन लिए हुए अभी एक माह ही हुआ था। उसके पिता का कहना था कि हीरा के लिए हीरा ही शोभा देता है। रमा पिता की बात को सदा प्राथमिकता देती थी।

वसन्त हो या पतझड़। उसे कोई अन्तर न दिखाई देता। मानो उसकी रूचि, उसकी पसन्द, उसका स्वाद एक सन्यासिनी की तरह हो। प्रकृति पर निखार आता है। चटकीले संयमित रंगों से चित्रों में सजीवता आती है। यौवन उमंगों और तरंगों का पुज ही तो है। एक ओर जल का एकान्त पोखर, दूसरी ओर बाढ़ की मचलती हुई सरिता।

रमा के गुण सुनकर न जाने कितने ही लड़के वाले यहाँ तक कि स्वयं लड़के अपने विवाह का रिश्ता लेकर आते और वापस निराश लौट जाते। उसके पिता को कोई पसन्द न आता। कोई साँवला होता। तो कोई पैसे वाला न होता या फिर उसमें कला न होती। उसके पिता चाहते थे कि लक्ष्मी और सरस्वती यानि कि धनी और विद्वान दोनों मिले। उसके पिता की बातें एक मखोल बन कर रह गयी।

आज प्रातः काल होते ही रमा घर की सफाई में लग गयी थी। जब से उसकी माँ की गोद में उसकी छोटी बहन पिंकी आ गयी है तब से काम बढ़ गया था। घर पर सब सो रहे थे। झाड़ू की खर-खर ध्वनि से ऊषा की नींद उचट गयी थी। ऊषा ऊँघते हुए बोली "दादी, जरा चाय बना देना।" कहकर लेट गयी "अरी ऊषा उठ, देख आज तेरी सगाई वाले आयेंगे।" रमा ने आवाज दी।

ऊषा स्वतंत्र विचारों वाली युवती थी। आधुनिकता उसकी नस-नस में समाया हुआ था। ऊषा के कानों में रमा के शब्द एक कान से घुसे और दूसरे कान से निकलने के बजाय उसके मुख से ठहाके की हँसी बन कर निकले थे। ऊषा के ठहाके की हँसी ने घर में सभी का जगा दिया था। उसे लगा ऊषा उस पर हँसी हो। ऊषा बिस्तरी चाय पीकर तेजी से उठी थी। नित्य के कार्यों से निवृत्त होकर सज-धज में लग गयी। सज-धज से उसका रूप

खिल उठा था। आसमानी रंग की साड़ी में उसका बदन ऐसे लगता जैसे आकाश में लिपटा हुआ चाँद वह स्वयं हो।

ऊषा रमा के पास आयी और अँगुली पर अपना पर्स (बटुआ) घुमाते हुए बोली, मैं चलचित्र देखने जा रही हूँ। भोजन के लिए मेरी प्रतीक्षा न करना। साढ़े चार बजे आऊँगी। कहकर घर से बाहर निकल गयी।

रमा भी बाहर आयी और ऊषा के कन्धे पर हाथ रखते हुए बोली- "अरे पगली, आज तेरी सगाई है। पाँच बजे सायं काल लड़के वाले आने वाले हैं। तुम्हें लाज शर्म है कि नहीं।"

वाह दीदी आप कितना सुन्दर मजाक करती हैं। पिताजी तो नाटक करते हैं। ऊषा ने जवाब दिया। जवाब सुनकर रमा कुछ उत्तेजित हो गयी। रमा बोली, "क्या कहती हो? पिता जी के लिए ऐसे शब्द प्रयोग करते तुम्हें शर्म नहीं आयी।" ऊषा जवाब देती उससे पहले पुनः रमा उस पर बरस पड़ी। परन्तु ऊषा ने कोई परवाह न की। जैसे उसने कुछ सुना ही नहीं, यदि सुना भी, तो उस पर ध्यान न दिया।

रमा कुछ पलों तक सहमी रही उसके बाद मौन भंग करते हुए उसने ऊषा के सर पर हाथ से सहलाते हुए बोली, "अरी पगली, पिताजी नाटक नहीं कर रहे हैं। वह तो तुम्हारे भले की सोच रहे हैं।

ऊषा ने रमा के मुख की ओर देखा और मन ही मन बड़बड़ाई, - पिताजी भला सोचते तो तुम्हारा विवाह पहले न कर देते? कह कर वह घर से निकल गई। अंग्रेजी माध्यम से पढ़ी ऊषा हिन्दी में ही बातचीत करना पसन्द करती थी। क्या मजाल कि हिन्दी बोले तो अंग्रेजी के शब्द आ जायें।

रमा का कहना था कि जो राष्ट्र अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान नहीं कर सकता वह राष्ट्र कभी गौरवान्वित नहीं हो सकता।

रमा मन में कोई बात छिपाये अपनी बहन की खुशियों में बड़े उत्साह से सम्मिलित हो रही थी। वह बात हिरन की तरह घर के एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ती। विचारों की श्रृंखला में नई-नई योजनायें बनाती और पल भर में उन्हें मिटा देती घड़ी ने चार बजाये। रमा ने घर का निरीक्षण किया सब कुछ व्यवस्थित था।

कुछ देर बाद द्वार पट पर लगी घंटी गुनगुना उठी। द्वार खोल कर रमा ने उनका स्वागत किया उसकी माँ भी सज संवर कर आ गयी थीं। नाश्ता पानी शुरू हुआ। बातचीत का सिलसिला आरम्भ हुआ। धीरे-धीरे समय बीतता गया। ऊषा की कमी महसूस की जाने लगी। उसके माता-पिता बात-चीत के सिलसिले में मेहमानों को लगाये रहने का प्रयास करते। रमा द्वार पर खड़ी ऊषा की राह देखती। सगाई की रीति और ऊषा को देखने की चाह लड़के की माँ को बेचैन कर देती।

द्वार की घंटी पुनः गुँज उठी। सबके चेहरे खिल गये थे। सभी की आँखे द्वार पर लगी हुई थीं। रमा ने द्वार-पट खोले तो कुछ देर तक शान्त खड़ी रह गयी। ऊषा के माँग में भरा सिन्दूर, माँग टीका गले में मंगलसूत्र देखकर उसके होश उड़ गये। रमा मानो एक मूर्ति की तरह स्थिर हो गयी। ऊषा ने दीदी सम्बोधन के साथ आगे बढ़ी। दोनों बहने एक दूसरे के गले से लिपट गयीं। दोनों बहनों की आँखों में आँसू छलक आये थे।

ऊषा ने साथ में आये नवयुवक का परिचय कराया- "दीदी ये मेरे पति हैं.... हम लोगों ने मन्दिर में विवाह कर लिया है।" नवयवुक रमा के पाँवों की तरफ झुका। रमा ने उसे उठाया और अन्दर चलने को कहा।

रमा दोनों को साथ लेकर अतिथि कक्ष में आ गयी। ऊषा की माँग में सिन्दूर और गले में पड़े मंगल सूत्र को देखकर सभी ज्यों के त्यों रह गये। चहल-पहल भरी बातों पर सन्नाटा छा गया। रमा की माँ देखते ही फफक पड़ी।

"अरे ऊषा तुमने यह क्या कर लिया?" उसकी माँ को कौन समझाये कि यह सब कुछ देखकर एक अबोध बालक भी यही कहेगा विवाह।

उसके पिता एक असफल नेता की तरह जीते थे "तुमने हमारे खानदान की इज्जत मिट्टी में मिला दी।"

रमा ने माता-पिता को समझाना आरम्भ किया। परन्तु ऐसा कोहराम मचा जैसे कोई मर गया हो। मेहमान भी मुँह बनाकर बड़बड़ाते हुए उल्टे पाँव वापस हो गये।

एक तरफ उसके पिता को खुशी हुई थी कि दान दहेज भी नहीं देना पड़ा। परन्तु इस खुशी की झलक अपने चेहरे पर नहीं प्रकट होने देना चाहते थे। उसकी माँ उसके पिता का मुख देखती। जैसा उसके मुख होता वैसा ही माँ का। उसे तभी गिरगिट दिखाई पड़ा। गिरगिट कैसा अजीब कीड़ा है जिस स्थान पर जाता है वैसा ही रंग बदल देता है। और रमा अपने को खोखली मान्यताओं से जकड़े हुए थी। वह ऊँच-नीच, भेद-भाव के ढोंगों से घिरकर शायद कायर हो गयी थी, उसके मन में तरह-तरह के भाव जगते। ऊषा के कृत्य से वह कितना खुश थी, यह वही अनुमान लगा सकती थी। एक नई दृष्टि मिली।

वसन्त का आगमन निकट था। रमा के मन में कौतूहल जाग गया था। एक नई चेतना उसके तन-मन में दौड़ गयी थी। उसके हृदय में भी मन्थन होता वह अतीत के पन्ने एक-एक कर पलटती रही। एक पृष्ठ पर वह अटक गई। कितना भोला था संदीप, कालेज का माली। गेहुआ रंग, गठीला बदन, बी.ए. पास। गुलदस्ते में विभिन्न तरह के फूलों को संजोकर रमा की मेज पर रख जाता था। "मिसजी यह तुम्हारे लिए चुनकर लाया हूँ।" उस का तुम से सम्बोधन किया जाना उसे चुभता था। और एक दिन जब उसने रमा को एक कागज का टुकड़ा दिया था, जिस पर लिखा था "मिसजी मुझे पता नहीं क्यों आपके गुलदस्ते से लगाव है।" रमा यह पढ़कर हँसी थी। वह युवक छोटी जाति का था। और फिर आयु में दो वर्ष छोटा। रमा को आज ऐसा लगा रहा था कि बसन्त आ गया है।

तीस वसन्तों ने उसे कुछ न दिया। अब उसे बस सुनहरी किरणें दिखाई दीं। अपने हृदय में छिपाये संदीप को जो कालेज का माली था उसे अपना माली बनाना चाहती थी। रमा के मन में प्रेम के अंकुर फूटने लगे।

कहानियों की भीड़ में नई कहानियां

प्रियम्बरा के कहानी संग्रह 'बारिश के अक्षर' की समीक्षा

सिद्धार्थ बल्लभ

प्रियम्बरा

५०-६० के दशक में 'नई कहानी' एक आंदोलन के रूप में सामने आई। नई कहानी अपने ट्रीटमेंट में पिछली कहानियों से थोड़ा अलग थी। सामाजिक परिवेश, व्यक्ति निरपेक्ष चित्रण, परिवेश का दबाव और मूल्यों को नए ढंग से रखने का प्रयास नई कहानी की विशेषता है। प्रियम्बरा के कहानी संग्रह "बारिश के अक्षर" की तमाम कहानियां किसी विद्रोह या अभिशप्त नियति की दयनीय स्थिति से इतर बाजारवाद के बाद उत्पन्न हुई नई परिस्थितियां तथा इन परिस्थितियों में बनने वाले संबंध, उन संबंधों का संघर्ष और उन संघर्षों से पैदा हुए नए ढंग के भावबोध को विस्तार देती हुई प्रतीत होती हैं।

कृत्रिम मूल्यों से मुक्ति और मानवीय सहज संवेदना का प्रतिनिधित्व करती बारिश के अक्षर शीर्षक कहानी की सरस्वती असहाय होने बावजूद अपने नैतिक मूल्यों से लड़खड़ाती नहीं है जबकि यहाँ बहुत स्पेस मिलता है कहानीकार को कि वह आत्मपीड़न या पीड़ा के सुख को नैरेट करती लेकिन मृदला गर्ग की 'तुक' की तरह कहानी का अंत प्यार की निरर्थकता पर व्यंग्य करते हुए नहीं होता बल्कि पाठक को मानवीय संवेदना के एक प्रस्थान बिंदु पर ले जाकर कहानी छोड़ती है। फ्रायड का जो अपराधबोध है वह कामेच्छा का दबाव है और यह आत्मपीड़न में अभिव्यक्त होता है। जाहिर है कि मनोविश्लेषण के दायरे में जो भी समस्या है उसका समय-समय पर साहित्यक विश्लेषण भी होता ही आया है। इस लिहाज से यहाँ कहानी का मनोविज्ञान महत्वपूर्ण तत्व बनकर सामने आता है जहाँ स्वीकार नकार के द्वंद पर संस्कार और मूल्यबोध की जड़ें छितराई हुई हैं।

आधुनिक स्त्री के संबंध में महादेवी जी कहती थीं कि वह 'अकेली' है। मालती, सुखदा जैसी स्त्रियों ने जिस तरह का जीवन चुना वह बहुत सुंदर भविष्य का परिचायक नहीं जान पड़ता। इसकी एक तरह से पुष्टि भगवती चरण वर्मा की रेखा भी करती है। उषा प्रियम्बद की 'देह की सीता' की डॉ.

शालिनी एक साथ पति और विवाहेतर संबंध को असंगति नहीं मानती। वह किसी भी श्रेष्ठ परिस्थिति का त्याग नहीं करना चाहती। लेकिन प्रियम्बरा के "समानांतर" शीर्षक कहानी के मुख्य पात्र मीता और मोहन अपने-अपने वैवाहिक जीवन से इतर सामन्जस्यपूर्वक अपने भविष्य का भवन निर्मित करने निकल जाते हैं तो वहाँ किसी तरह विद्रोह अथवा आधुनिकता नहीं है वरन उसके पीछे के मनोविज्ञान में बाजारवाद की कोख से पैदा हुआ आधुनिक जीवन शैली है। महानगरों में यह दृश्य आम है। पूंजीवादी संस्कृति ने पति-पत्नी के अहम को इतना ज्यादा विस्तृत कर डाला है कि उसके परिणाम में तनावग्रस्त दाम्पत्य और बिखराव निहित है। इस तरह के विषय पर ममता कालिया की अपत्नी या कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी की तरह अश्लील भाषा से प्रियम्बरा बचती हैं और अपने रचनाकर्म में मानवीय मूल्यों पर ज्यादा से ज्यादा केंद्रित रहती हैं। अलगाव के स्रोत के रूप में मानवीय अंतःकरण की भूमिका, उसकी गति प्रकृति और दिशा को ही अपनी सृजनात्मक कल्पना में वो शामिल करती हैं।

इस संग्रह की तमाम कहानियां आधुनिक व्यक्ति के संवेगों की अभिव्यक्ति हैं। ट्रीटमेंट में स्पष्ट है कि कहानियों के पात्र न तो सामन्जस्यवादी हैं और ना ही समन्वयवादी। पृष्ठभूमि में छोटे शहर और महानगर का मध्यमवर्ग है। संदर्भ में स्त्रियां हैं। भाषा और शिल्प विषयवस्तु को लेकर और अधिक संवेदनशीलता की मांग करती है लेकिन देहवाद और कलावाद से इतर अपने परिवेश और उस परिवेश से उपजी कल्पना को अन्तर्ग्रथित करने का प्रयास इस संग्रह को पठनीय बनाता है।

पुस्तक का मूल्य है १६० रूपये। इस संग्रह को वनिका प्रकाशन से प्राप्त किया जा सकता है। पुस्तक अमेज़न पर उपलब्ध है ।

नदी

डॉ. राम प्रवेश रजक
(हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय)

मुहाने से निकल, तीव्र गति से बहना
और बहकर, मिल जाना महासागर में ।
जन्म और मृत्यु, शास्वत सत्य है
मनुष्य बेवजह अकड़ता है
इस नश्वर शरीर पर ।
दुनिया भर की गंदगी को अपने
अंदर समाहित कर
कभी नहीं उगलती जहर
आज भी मिटाती है सबकी प्यास
भरती है सबका पेट ।
नदी के भीतर है, नवरत्न
मनुष्य के भीतर है जहर
नदियों का धारा प्रवाह बहना।
चोट खाना, शिलाओं से टकराना
पहाड़ों से गिरना/बर्फ बनना, पिघलना
मनुष्य को देती है सीख/चलना ही जीवन है।
नदियों में लोग/उडेल देते हैं, अपनी गन्दगी
नहीं उड़ेलते अपने, गंदे स्वभाव को
इसलिए वे स्वयं पहुँचने वाली है
तुम्हारे दहलीज पर, कुछ वर्षों में
नदी में समाया खर पतवार
नदी में समाया है गाँव और शहर
नदी में समाया है बड़े-बड़े उद्योग
कल-कारखाने नदी जब क्रोध में
आती है तो बचता है सिर्फ रेत।

दाउ जी गुप्त के चाहने वाले हर देश और लखनऊ के हर मोहल्ले में

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक', ओस्लो, नार्वे

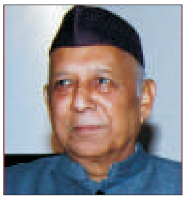

लखनऊ में मेयर, विधान परिषद के सदस्य रहे दाउ जी गुप्त एक अच्छे लेखक थे। वह अनेक भाषाओं के विद्वान थे। दाउ जी गुप्त का जन्म १५ मई १९४० में और मृत्यु २ मई २०२१ को हुई। अनेक पुस्तकों के लेखक दाउ जी को विदेशों में हिन्दी पर अच्छा ज्ञान था। कोविड महामारी ने उन्हें हमसे छीन लिया। उनके निधन की खबर सुनते ही मुझे अत्यन्त दुःख हुआ। मेरे लिये उनकी स्मृतियाँ को भुलाना आसान नहीं है।

३ मई को शाम पौने चार बजे भारतीय समय मैंने लखनऊ में फोन पर डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी से बातचीत करके पुराने दिन याद किये। उन्होंने बताया कि अब वह स्वस्थ हैं, कोरोना शरीर को तोड़ देता है। आदरणीय दीक्षित जी ने बताया कि दाऊजी गुप्त जी अक्सर लखनऊ विश्वविद्यालय आया करते थे।

लखनऊ के हर मोहल्ले में उनके चाहने वाले

लखनऊ के हर मोहल्ले में उनके चाहने वाले हैं अभी जब मुझे कल साहित्यकार, समाजसेवी और राजनीतिज्ञ डॉ. दाउ जी गुप्त के निधन का समाचार मिला तो विश्वास नहीं हुआ, पर विश्वास करना पड़ा। हम अपनी स्मृतियों से उन्हें आजीवन नहीं भुला सकते। श्रद्धेय डॉ. दाऊ जी गुप्त को स्मरण करते ही उनका हँसता चेहरा सामने आ जाता। मेरे मन मस्तिष्क में अनेक मधुर स्मृतियाँ आत्मीय दाऊ जी गुप्त से जुड़ी हैं।

यह भी बताता चलूँ कि लखनऊ में कोई ऐसी गली नहीं गुजरती जहाँ लोग उन्हें नहीं जानते हैं। वे ऐसे कम लोगों में थे जिन्हें लखनऊ वासी चाहे वह उर्दू वाला है, अवधी भाषी है या हिन्दी सभी से उसकी जबान में बात करते। आप अनेक भाषाओं के जानकार थे।

लखनऊ में जहाँ मैं उनके निवास पर अनेक बार मिला। जब वह मुझसे मिलते थे मेरे सम्पादन में

नार्वे से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका स्पाइल-दर्पण के बारे में जरूर पूछते थे।

दाउ जी नाका हिंडोला, लखनऊ में रहते थे, इनके घर से थोड़ी दूर पर मेरे अध्यापक/ प्रधानाचार्य डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र बिरहाना में रहते थे। मेरा घर ८-मोतीझील ऐशबाग रोड, लखनऊ से मोटरगाड़ी से मुश्किल से पांच-सात मिनट की दूरी पर है। वह अपने निवास पर चेतना साहित्य परिषद् की तरफ से साहित्यिक गोष्ठी कराते थे जो दशकों आयोजित होती रहीं।

'दीप जो बुझते नहीं' का विमोचन

सन १९८८ की बात है, मेरे चौथे काव्य संग्रह 'दीप जो बुझते नहीं' का हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय में विमोचन था। श्रद्धेय डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित जी विभागाध्यक्ष थे जिनके शिष्य भारत में अनेक संस्थानों में प्रतिष्ठित पदों को गौर्वान्वित कर रहे हैं। तब डॉ. दाऊ जी गुप्त जी को भी आमंत्रित किया था। उन्हें पुस्तक की एक प्रति एक दिन पहले भिजवा दी थी।

'संभावनाओं की तलाश' का विमोचन

१९९४ को मेरे पांचवे काव्यसंग्रह 'संभावनाओं की तलाश' का विमोचन हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय में किया गया था। यह कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण था। इसमें मेरे गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इंटर कालेज में प्रधानाचार्य (हाईस्कूल के गुरु) डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, डी ए वी कालेज में मेरे गुरु श्री उमादत्त त्रिवेदी जी (ससुराल पक्ष से) रिश्ते में त्रिवेदी जी का मौसा हूँ। श्री उमादत्त त्रिवेदी जी जो यहियागंज में रहते थे।

उनकी पत्नी श्रीमती प्रियंवदा त्रिवेदी हनुमान प्रसाद रस्तोगी इंटर कालेज की प्रधानाचार्य रही हैं। त्रिवेदी जी के पुत्र श्री सुधांशु त्रिवेदी जी भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता हैं।) बी एस एन वी डिग्री कालेज में बी ए में मेरे हिन्दी के प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश त्रिवेदी जी, हिंदी के मूर्धन्य विद्वान डॉ. कुँवर चंद्रप्रकाश सिंह, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के अध्यक्ष प्रसिद्ध कवि लक्ष्मीकांत वर्मा, डॉ. आभा अवस्थी और अन्य थे।

आपको पता है कि यदि आपको पुस्तक का विमोचन करना है तो इंतजाम खुद ही करना पड़ता है। मेरे पास इस कार्यक्रम में श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा जी और डॉ. कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह को लाने के लिए कोई यातायात की व्यवस्था नहीं थी। उस समय बड़े टेम्पो चलते थे अतः अलग-अलग दो टेम्पो खाली कराकर उन्हें लाया था। एक अलग तरह का अनुभव था।

इस कार्यक्रम के कुछ दिन पहले लखनऊ में मेरे पहले कहानी संग्रह 'तारुफी ख़त' जो उर्दू में था का विमोचन चोर वाली गली, लालबाग में एक शायरा के घर पर हुआ था जिसमें विलायत जाफरी जी भी उपस्थित थे।

दाऊ जी गुप्त को मेरी पुस्तकों के शीर्षक और दो तीन कवितायें याद थीं। वह जब कार्यक्रम में आते थे तो तैयारी करके आते थे। जो यादों की डोर पकड़ में आयेगी यानि स्मृतियों में आयेगी उसे उलझे ऊन के गोले सा खोलता चला जाऊँगा और आपके सामने रखूँगा।

१९९३ में चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन

सबसे पहले आपको १९९३ में मारीशस ले चलूँगा जब विश्व हिन्दी सम्मेलन में दाऊ जी गुप्त जी भी

आये थे। मेरे परिचित सांसद शंकर दयाल सिंह, विजयेन्द्र स्नातक जी और दाऊ जी गुप्त एक प्रदर्शनी में गये जहाँ हिंदी के लेखकों में कुछ सोर्स लगाकर अपना चित्र लगवाने में सफल हो गए थे वहां प्रेमचंद को कौन पूछता है। जब विजयेंद्र जी से बात की उन्होंने देखा और कहाँ यह व्यवस्था का काम है फिर उनसे परिचय हुआ। मारीशस में जब मैं कई बार अनेक बिखरे हुए लेखकों के झुण्ड में जाता तो दाऊ जी गुप्त जी भी कभी लखनऊ से आये लगभग ३५ लोगों के बीच तो कभी जागरण के नरेंद्र मोहन और अन्य के साथ तो कभी यूरोपीय हिन्दी के विद्वानों के साथ बातचीत करते मिल जाते थे।

मैं ओस्लो नार्वे से मारीशस इस सम्मेलन में भाग लेने एक सप्ताह पहले आ गया था।

१९९३ में चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन जो मारीशस में सम्पन्न हुआ था वह यादगार सम्मेलन था। वहाँ लखनऊ से डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, दाऊ जी गुप्त, डॉ. रमा सिंह, डॉ. सरोजिनी अग्रवाल, डॉ. शीला मिश्र, डॉ. विद्याविन्दु सिंह सहित लगभग पैंतीस से अधिक लेखक थे। डॉ. विद्या निवास मिश्र, डॉ. कामता कमलेश, डॉ. भक्तराम शर्मा, प्रकाशक विजय बेरी जी, धनञ्जय सिंह जी, मेरी फिल्म में काम करने वाली कवियित्री अनीता अनिलाभ और न जाने कितने देश-विदेश के लेखकों से मिला जुड़ा आज भी अनेकों से जुड़ा हूँ। ओस्लो नार्वे से मैं मारीशस एक सप्ताह पहले आ गया था।

सम्मेलन में दो कवि सम्मेलन हुए थे एक कवि सम्मेलन विश्व हिन्दी सम्मेलन की पूर्व संध्या पर हुआ था जिसकी शुरुआत में मेरी कविताओं से हुई थी और जिसका संचालन यार्क, यू.के. के डॉ. एम के वर्मा कर रहे थे।

एक दिन पूर्व इस कवि सम्मेलन में ब्रिटेन के डॉ. एम के वर्मा जी, दक्षिण अफ्रीका से हरभजन सीताराम और रामनिवास जी और बहुत से लोग थे जिसमें कुछ दिल्ली और मारीशस के लोगों से परिचित हुआ था।

अखबार के प्रथम पृष्ठ पर साक्षात्कार

जिस दिन चौथा विश्व हिन्दी सम्मेलन का उद्घाटन दिन था मेरा साक्षात्कार 'दि सन' नामक फ्रेंच भाषा के अखबार में पहले और अंतिम पृष्ठ में विस्तार से छपा था। मैनें दाउ जी गुप्त जी को दिखाया वह बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा आपने लखनऊ की नाक ऊँची की है। विश्व हिन्दी सम्मलेन में एक दिन पहले शाम को एक साक्षात्कार रेडियो में प्रसारित हुआ था। सम्मेलन के विशेषांक में मेरा एक लेख और एक कविता प्रकाशित हुई थी।

यह अखबार प्रधानमंत्री के पक्ष का अखबार था अतः मुझे लखनऊ के साहित्यकारों के साथ प्रधानमंत्री जी ने निजी चाय पर बुलाया था जिसका जिक्र डॉ. शीला मिश्रा जी ने भी अपने लेखों में किया है।

मैं १९९० में एक अन्य सम्मेलन में मारीशस आ चुका था अतः जगदीश गोबर्धन जी से मित्रता हो गयी थी जो तब स्वास्थ मंत्री थे पर १९९३ में जगदीश गोबर्धन जी कृषि मंत्री थे पर इंतजाम में बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे थे।

जब मॉरीशस में दाउ जी गुप्त जी मिले मुझसे मिलते ही पूछा कि नार्वे का क्या हाल है। और बातों का सिलसिला शुरू होता तो साहित्य और हिन्दी से जुड़े हुए एक-एक क्रम जुड़ने लगते। धीरे-धीरे हम लोगों की बाते सूत/डोरी की तरह बुनते-बुनते एक यादों की चादर तैयार हो जाती। दाउ जी गुप्त नार्वे आ चुके थे तब मैं उनसे परिचित नहीं था। वह नव वर्ष में सुन्दर छपे हुए कार्ड और टाइप राइटर से लिखे पत्र भेजते थे।

ब्रिटेन में दाउ जी का साथ

पद्मभूषण डॉ. लक्ष्मी मल सिंघवी जी सन १९९१ से १९९७ तक ब्रिटेन में भारत के कमिश्नर थे। वह अपने कार्यकाल में कवि सम्मेलन, हिन्दी सम्मेलन और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम कराते थे। चूँकि मैं नार्वे से हिन्दी की पत्रिका प्रकाशित करता था अतः नार्वे में भारतीय दूतावास के जरिये मेरे पास आमंत्रण आया था।

तीन बार दाउ जी गुप्त के साथ ब्रिटेन में अनेक कार्यक्रमों में साथ-साथ भाग लेने का अवसर मिला। विभिन्न नगरों में यात्रायें साथ-साथ कीं। उनके पास संस्मरणों का खजाना था। वह बहुत बड़े विद्वान थे।

अमेरिका में दाउ जी का साथ

मैं विश्व हिन्दी समिति और अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सिटी के आमंत्रण पर यू एस ए गया था। न्यूयार्क में प्रतिष्ठित भारतीय चिकित्सक और कवि डॉ. विजय कुमार मेहता जी के घर पर मैं और डॉ. श्याम सिंह शशि जी रह रहे थे। एक शाम को डॉ. दाउ जी गुप्त जी आये हम सभी एक कमरे में रहे। दाउ जी सभी को आदर देते थे वही आदर हम सभी उन्हें देते हैं। सौरभ पत्रिका के प्रकाशन और सम्पादन में भी डॉ. दाऊ जी गुप्त सहयोग देते थे। अनेक कार्यक्रमों में हम लोगों ने साथ भाग लिया।

पुत्र पद्मेश गुप्त पर गर्व

डॉ. दाउ जी गुप्त अपने पुत्र पद्मेश गुप्त पर गर्व करते थे। लखनऊ में होने वाली मुलाकातों में वह हमेशा पद्मेश का जिक्र करते थे। जब सोनांचल साहित्य संस्थान सोनभद्र ने सुरेशचंद्र शुक्ल सम्मान पद्मेश गुप्त को दिया था तो उनका सम्मान स्वयं दाऊ जी ने रमेश पोखरियाल निशंक के हाथों लखनऊ में प्राप्त किया था। यह मेरे लिए अद्भुत था कि अपने (मेरे) नाम पर लोगों को पुरस्कृत होता देख रहा था। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध लेखक और पूर्व आई जी लखनऊ महेश चंद्र द्विवेदी जी भी पुरस्कृत किये गए थे।

उनके पुत्र पद्मेश गुप्त लन्दन यू के में कैम्ब्रिज में कार्यरत हैं और हिन्दी के अच्छे रचनाकार हैं। उन्होंने लन्दन से पुरवाई पत्रिका निकाली थी। आज भी डिजिटल मंच पर दिव्या माथुर जी के साथ मिलकर साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

अंतिम मुलाकात

डॉ. दाउ जी से जुड़े दिल्ली और लखनऊ नगर के मेरे पास अनगिनत प्रसंग हैं। आखिरी मुलाक़ात लखनऊ विश्व विद्यालय में हुई थी। पिछले वर्ष जनवरी २०२० में लखनऊ विश्वविद्यालय में उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान ने हम दोनों को पुरस्कृत किया था।

उन्हें भुलाना आसान नहीं है।

वैश्विक मानवीय समस्या और चिन्ताओं को स्वर देती हैं 'लॉकडाउन' की कविताएँ'

पवन कुमार रावत, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर, उ०प्र० - २२८११८

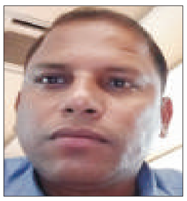

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' एक महत्वपूर्ण प्रवासी साहित्यकार हैं। उ०प्र० के सांस्कृतिक शहर लखनऊ में जन्में और ओस्लो, नार्वे में लम्बे समय से प्रवास कर रहे शरद आलोक की एक महत्वपूर्ण काव्य कृति 'लॉकडाउन' वर्ष २०२० ई० में प्रकाशित हुई। इस संग्रह में कुल सत्तावन कविताएँ संकलित हैं। जो आर०के० पब्लिकेशन मुम्बई से प्रकाशित हुई है। यह काव्य संग्रह ऐसे समय में हमारे सामने आता है, जब देश-दुनिया का हर कोना कोरोना के भयंकर संक्रमण से जूझ रहा था। जीवन की इस आपाधापी के बीच इस कृति ने अस्तित्व में आकर मनुष्य को वैचारिक रूप से मजबूत बनाने का काम किया है। प्रसिद्ध समालोचक प्रो० शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने इस कृति को ''कोरोनाकाल पर दुनिया की पहली काव्य कृति'' कहा है। यह संग्रह अपनी मौलिकता और विषय विविधता के कारण अनूठी छाप छोड़ता है। इस संग्रह की कविताओं में कवि शरद आलोक का सत्ता, समय, समाज और जीवन के प्रति एक गंभीर सामाजिक, आर्थिक और नैतिक चिन्तन देखने को मिलता है।

शरद आलोक एक गंभीर अध्येता होने के साथ-साथ एक निर्भीक पत्रकार भी हैं। यही कारण है कि उनकी कविताएँ समय की चुनौतियों और समस्याओं का बारीकी से विश्लेषण करती हैं। संग्रह की पहली कविता 'यूरोप में रोमा बंजारे' है। इस कविता में कवि ने यूरोप के रोमा बंजारों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर चिन्ता व्यक्त किया है। जो रोमा बंजारे कभी डेनमार्क के राजसैनिक थे। ज्योतिष और नृत्य जैसी कला में पारंगत थे। वह आज सड़क पर भीख माँगकर गुजर बसर करने को विवश हैं। मेट्रो स्टेशन और बाजारों के बीच खड़े होकर लोक संगीत को बचाने के लिए प्रयासरत दिखायी पड़ते हैं। लेकिन दुर्भाग्य ये है कि बाजारवाद के इस दौर में नयी पीढ़ी के मन में अपनी संस्कृति के प्रति कुंठा का भाव व्याप्त है -

''बैठा हूँ चौराहे और बाजारों में,
मौसम का हम पर असर नहीं
लोग नहीं देते हैं भिक्षा
बस धनार्जन में कमजोर पड़े हैं
कोई कहता है हम चिकने घड़े हैं,
यहाँ-वहाँ हर ओर पड़े हैं।''

इस कविता के बहाने से कवि ने देश-दुनिया में फैले उन सभी प्राचीन संस्कृतियों के रक्षकों की हालत पर अफसोस जाहिर किया है, जो व्यवस्था और समाज की अनदेखी से हाशिए पर हैं। और कष्ट भोगने के लिए संतृप्त हैं।

कवि शरद आलोक का मन उनके लिए भी बेचैन है, जो इस देश को खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बनाने के लिए दिन-रात खेतों में खपते हैं। दूसरों का पेट भरने वाला आज स्वयं भूखा है। उसकी लाश पर केवल राजनीति की जाती है। 'जो दूसरों को खिलाता था, वह आज' नामक कविता में कहते हैं -

''जो दूसरों को खिलाता था
वह आज भटक गया है ?
घर से दूर आज इस पेड़ पर लटक गया है।''

एक पत्रकार होने के नाते वे समय-समय पर किसानों की समस्या और उनके जनतांत्रिक अधिकारों के लिए हमेशा से वे माँग उठाते आये हैं। 'उनसे सीखो जो देख नहीं पाते' नामक कविता में कवि भारतीय राजनीति में तेजी से हावी हो रहे अवसरवाद, स्वार्थपरकता, एकतरफा फैसला लेने की दुष्प्रवृत्ति और भ्रष्टाचार के भयावह रूप को भविष्य के लिए खतरनाक मानते है। संकीर्ण सोच को वह राजनीति और समाज दोनों के लिए अभिशाप मानते हैं। उनकी दृष्टि में स्वस्थ्य और परिपक्व राजनीति के लिए लोकतांत्रिक विचार और सामाजिक न्याय का मिशन होना आवश्यक है। ''उनसे सीखो जो देख नहीं पाते'' नामक कविता में वह कहते हैं-

''तुम अंधभक्त बनकर
फैसले नहीं ले पाओगे
दूसरों की लाठी क्या,
अपनी लाठी नहीं बन पाओगे
संकीर्णता हमारी कमजोरी है
तुम्हारी इन्द्रियां तुम्हारी ताकत हैं।''

कोरोना के बढ़ते संक्रमण को देखते हुए भारत सरकार ने मार्च, २०२० में एहतियात के तौर पर पूरे देश में लॉकडाउन की घोषणा कर दिया। संक्रमण और संकट की घड़ी में अपनों को बचाना सबसे बड़ी चुनौती थी। इस आपाधापी में देश के कोने-कोने से लोगों का पलायन शुरू हो गया। सरकार को उन्हें कुछ दिन के लिए क्वारंटाइन करना पड़ा। लेकिन दुर्भाग्य है। कि इस कठिन समय में हमारी व्यवस्था की तैयारियाँ कितनी थी? और उसे छिपाने के लिए कैसे-कैसे व्यूह रचे गये? यह सच भी उजागर हो गया। 'लॉकडाउन-१' नामक कविता में इस कड़ुवे यर्थाथ को अभिव्यक्त करते हुए कवि 'शरद आलोक' कहते हैं-

'' रैनबसेरा बनाकर चले गये
भूखा छोड़कर।
पुलिस से पिटवाते हो
अखबार में छपता है
सब काबू में है
खुद कोठों पर आराम फरमाते हो।''

शरद आलोक किसानों और मजदूरों के कवि हैं। वे इस श्रमजीवी समाज के लिए चिन्तित दिखाई पड़ते हैं। उनकी रचना में यह श्रमजीवी वर्ग केन्द्र

में है। वह चाहते हैं कि उन्हें उनका वाजिब हक मिले। 'क्वॉरंटाइन में' नामक कविता में वह कहते हैं-

''मेरी रचनाओं में तुम रहोगे
मैं तुम्हारे बीच रहूँगा।
तुम भारतीय मजदूर हो,
बहुत अच्छा,
तुम एक इन्सान हो
सबसे अच्छा!''

शरद आलोक निर्भीक व स्पष्टवादी रचनाकार हैं। वे धर्म का आवरण लेकर शोषण का खेल खेलने वालों का कड़ा प्रतिरोध करते हैं। वे मनुष्य और मनुष्यता के हिमायती हैं। धर्म का भय दिखाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने वालों को वो आड़े हाथों लेते हैं। कोरोनाकाल में इंसान ही इंसान के काम आया। सभी प्रार्थना घर बन्द रहे। मानवीय जीवन का महत्व और उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को कैसे बचाया जाये? इस त्रासदी ने हमें आईना भी दिखाया है। 'लॉकडाउन'-१' कविता में वह कहते हैं-

'' जान है तभी धर्म है
जब जान नहीं
तो धर्म क्या करेगा
चलायेगा अपनी-अपनी दुकान।''

शरद आलोक की कविताएँ समसामयिक गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। वे अपने समय के खुरदुरे यथार्थ से मुँह नहीं फेरते। और न ही 'सब कुछ अच्छा है' का स्वांग रचते हैं। इसीलिए वह पूँजीपतियों के उस अमानवीय रूप से हमें परिचित कराते हैं, जिनके ऐशो-आराम की नींव गरीब-गुरबों के रक्त और भूख पर बनायी गयी है। अपने धनबल और बाहुबल से सत्ता व्यवस्था में सीधे तौर पर हस्तक्षेप करते हैं। वे सरकार पर दबाव बनाते हैं। ऐसा करके वे लोकत्रांत्रिक व्यवस्था की जड़ों को कमजोर करने का प्रयास करते हैं। 'लॉकडाउन-२' कविता में कवि की मूल चिन्ता इसी रूप में मुखरित हुई है-

''भरे हुए सरकारी अनाज के गोदामों को
भूखी जनता का धैर्य चिढ़ा रहा
जनता की भुखमरी पर
कमा रहा कॉरपोरेटर जगत
सबसे ज्यादा अमीर की सूची में
नाम दर्ज करा रहा
जैसे सरकार को अपनी
उंगली में नचा रहा।''

शरद आलोक भले ही अपने वतन से मीलों दूर हों। लेकिन उनके मन में भारत बसता है। वे भारत की दूषित राजनीति से काफी चिन्तित दिखाई पड़ते हैं। स्वस्थ्य और मजबूत लोकतंत्र के लिए जरूरी है, कि एक मजबूत विपक्ष का होना। जो समय-समय पर सरकार की उन नीतियों की आलोचना करे, जो जन सरोकार से असम्बद्ध होते हैं। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण ये है कि असल मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने के लिए सांप्रदायिकता का जहर घोलना आज राजनीति की प्रयोगशाला बनती चली जा रही है। समय की माँग है कि भारतीय राजनीति को ऐसे लोगों और ऐसे मुद्दों से बहिष्कृत किया जाये। 'लॉकडाउन-२' कविता में वह कहते हैं-

''प्रजातंत्र में भी बहस से डरते लोग
विपक्ष ने जनता की आवाज उठाकर
लोगों के दिल में जगह बनाये उससे पहले,
जनता की समस्या को भुला,
सांप्रदायिकता का जहर
फैला रहे हैं लोग।''

वर्तमान में 'मॉबलिंचिंग' देश की एक बड़ी समस्या है। जहाँ अनियंत्रित और बहकी हुई भीड़ कानून व्यवस्था को धता बताते हुए उग्र हो जाती है। अपराधी या कभी-कभी निर्दोष लोगों की हत्या जबरन भीड़ द्वारा कर दी जाती है। इससे न केवल समाज में भय व अराजकता की स्थिति उत्पन्न होती है। अपितु कानून व्यवस्था की जड़ों को कमजोर करने का प्रयास किया जाता है। देश में बढ़ती इस तरह की घटनाओं ने समाज के कमजोर व हाशिए पर खड़े लोगों को असुरक्षित होने का एहसास दिलाया है। 'मॉबलिंचिंग' की घटनाओं ने देश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शर्मसार करने का काम किया है। शरद आलोक की कविताएँ संवेदन शीलता के साथ इस चिन्ता को व्यक्त करती हैं। 'लॉकडाउन-३' कविता में वह कहते हैं-

''मॉबलिंचिंग से
आज भी मरते हैं लोग,
गाँधी के देश में।''

शरद आलोक 'अभिव्यक्ति की आजादी' को दबाने का प्रतिरोध करते हैं। उसे यह एक संवैधानिक हत्या मानते हैं -

''संसद में नहीं करने देते बहस
जब मॉबलिंचिंग पर
महुआ मोइत्रा को,
संसद में तीन मंत्री और अध्यक्ष
बोलने से रोकते हैं,
तब पता चलता है,
अभिव्यक्ति की आजादी/बनाम
महिलाओं की ताकत ?''

'ये प्रवासी मजदूर' शीर्षक कविता में कवि शरद आलोक देश के उन्नयन में श्रमिकों की महत्त्वपूर्ण भागीदारी और उनके श्रम के मूल्य से हमें परिचित कराते हैं -

''यदि हड़ताल पर चले गये तब,
पुलिस को कौन वेतन देगा ?
क्या लूटोगे देश वासियों को
जिससे चलता देश आज है
ये प्रवासी मजदूर!''

इसी तरह '३८ प्रतिशत की सत्ता' नामक कविता में कवि शरद आलोक लॉकडाउन के दौरान देश के कोने-कोने से विस्थापित हुए भूख-प्यास से बेहाल मजदूरों की व्यथा को नहीं भूल पाते हैं। इन कठिन हालातों में सत्ता और समाज की उपेक्षा ने प्रवासी मजदूरों को आजीवन न भूलने वाला दर्द दिया है-

''दिन-रात काम कर
देश का करते हैं निर्माण,
महामारी में दूध की मक्खी
ये प्रवासी मजदूर।''

कोरोनाकाल में मानवीय संवेदना की कमी ने हमारी आधुनिक और विकसित होती हुई सभ्यता पर कई प्रश्न खड़े किये हैं।

कवि शरद आलोक की कविताएँ धारदार और मारक हैं। वह राजनीतिक विसंगतियों पर सीधे-सीधे चोट करती हैं। राजनेता और राजनीति के गिरते स्तर से वह आहत होते हैं। जिसने भोली-भाली जनता को विकास के सपने दिखाकर ठगने का प्रयास किया है। 'जनता बजाये थाली और नेता ठोके थाली' एक व्यंग्यात्मक

कविता है। इस कविता में वे कहते हैं -
''जो जनता को
जितना बड़ा ठेंगा दिखाता है
उतना बड़ा नेता है।
जहाँ जनता परेशान है,
नेता बेलगाम हैं।''

कवि शरद आलोक के आदर्श भारत की वे महान विभूतियाँ हैं, जिन्होंने देश में अपने विचारों और कार्यों से मानवता की जड़ों को समृद्ध और सुरक्षित रखने का प्रयास किया है। वे गाँधी, बुद्ध, मदर टेरेसा और गुरू नानकदेव को ही वास्तविक नायक मानते हैं। दूसरा वे वीर जांबाज हैं, जो हमारी सरहदों की निगरीना हर समय करते हैं। जिनकी वजह से ये मुल्क साँसें ले रहा है। देश अपने सपनों को एक नया आकार देने की कोशिश करता है। 'गाँधी का देश फिर से जगा है' शीर्षक कविता में वे ऐसे ही नायकत्व को अपना आदर्श मानते हैं-
''देश नायक बुद्ध, गुरू नानक, गाँधी व टेरेसा हैं,
देश मानवता पे लड़े विश्व के मेरे आदर्श हैं।
सीमा पे तैनात हैं अपना घरबार छोड़ के,
कोटि-कोटि प्रणाम उन्हें, देश के शीर्षस्थ हैं।''
'जनता का सबक' कविता में कवि शरद आलोक सांप्रदायिक सामंजस्य को सांप्रदायिक वैमनस्य में परिवर्तित करने वालों पर आक्रामक हो जाते हैं। वे ऐसे कुटिल लोगों को 'अर्श से फर्श' पर आने का संकेत भी देने से चूकते नहीं हैं। उन्हें इस देश की आवाम पर, उसके सौहार्द पर पूरा भरोसा है। तभी तो वह कहते हैं-
''आज सिंहासन तो कल सड़क पर आ जायेगा,
जो आसमान पर उड़ेगा वह जमीन पर गिर जायेगा।
जो भी हिन्दू, मुस्लिम के नाम पर हमें लड़ायेगा,
वह हिन्दुस्तान की जनता से सबक सीख जायेगा।''

'शरद आलोक की चिन्ता का केन्द्र केवल राजनीतिक सुधार ही नहीं है। अपितु वे देश के बिगड़ते पर्यावरण से भी खासा व्यथित दिखायी पड़ते हैं। वे प्रकृति प्रेमी हैं। विकास के नाम पर देश में फैलते औद्योगीकरण के जाल से जिस तरह साफ हवा, साफ पानी का संकट उत्पन्न हो रहा है। इसे वे आने वाली सदी की एक भीषण त्रासदी के रूप में देखते हैं। फिर कोरोनाकाल में हमने इन चीजों के मूल्य को समझा है -
''साँस भी लेना दूभर भैया-बहना,
प्रदूषण से हम लेंगे आजादी
साइकिल से भर जायें सड़कें,
लेंगे हम मोटरगाड़ी से आजादी।''

अपने वतन को छोड़कर रोजगार के सिलसिले में दूर विदेशी धरती को अपना ठिकाना बनाना, फिर वहीं बस जाना और हमेशा के लिए अपनी देहरी का छूट जाना इस बेस्वाद वाले अनुभव से शरद आलोक पूरी तरह वाकिफ हैं। अदब और तहजीब के शहर लखनऊ में जन्में, पले-बढ़े शरद आलोक विगत् चालीस वर्षों से भी अधिक समय से नार्वे, ओस्लो में सपरिवार रह रहे हैं। इन वर्षों में उन्होंने दुनिया घूमी है। लेकिन जब अपने घर की बात आती है, तब वह अत्यन्त भावुक हो जाते हैं। 'वतन की पुकार' नामक कविता में वह कहते हैं -
''चालीस साल छोड़े अपने वतन की पुकार।
मेरी मातृभूमि का, खुशी से भरे घर-द्वार।।''
'तुम मेरे राम हो' नामक कविता में कवि आज के राजनेताओं को राम के आदर्शों को अपने जीवन में सहेजने के लिए आवश्यक मानते हैं। राम का चरित्र लोक कल्याणकारी था। वे किसी एक के नहीं थे। राम सब के थे। उनका जीवन सर्व समाज के लिए समर्पित था। इसलिए शरद आलोक कहते हैं-
''सत्ता के गलियारों की न भीड़ बनो
तुम समाज की रीढ़ बनो।
श्रम से, शिक्षा से और समर्पण,
जन-जन के तुम कल्याण बनो
तुम राम बनो, तुम राम बनो,
धरती पर बोझ नहीं, बनो न्यायप्रिय
भ्रष्ट हाथों में नहीं बिको बन्दी बनकर
स्वच्छंद बनो, निष्पक्ष बनो।''

शरद आलोक आज के इस कठिन समय में गाँधीवादी विचारों को आत्मसात् करना जरूरी मानते हैं। भारत से बाहर दुनियाभर में गाँधी जी को मानने वालों का एक बड़ा तबका है। पर हम इस युग पुरुष को भूल गये ? ये हमारा दुर्भाग्य है। गाँधी एक विचार है। जिस-जिस ने भी इन विचारों को जीवन में उतारा है। वह कभी हारा नहीं है। 'युग पुरुष महात्मा गाँधी को करें नमन' कविता की मूल चेतना यही है-
''नमन महापुरुष महात्मा गाँधी
युग पुरुष, सत्य अहिंसा के शांतिदूत,
जो भी दो कदम साथ चले,
तुम्हारे सिद्धांतों को साथ लिये
न रूके कभी बढ़ने वाले,
न झुके कभी सच कहने वाले।''

'हाशिए के आदमी को साथ लायें' संग्रह की अन्तिम कविता है। इस कविता में कवि शरद आलोक की जनपक्षधरता देखने को मिलती है। यह कविता सत्ता और समाज से जुड़े प्रश्नों को निर्भीकता से उठाती है। समकालीन राजनीति की उठा-पटक से हाशिए के समाज पर जो विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है। उसका सच इस कविता में निहित है। विकास के उस दावे पर व्यंग्य है ये कविता जो हाशिए के आदमी को अपना मानती है-
''कागजों में विकास का सीना
फूला है।
पता नहीं गर्व से
या बीमारी से ?''

इस कोरोनाकाल में आम आदमी की मुश्किलें बढ़ी हैं। उसे भूख, गरीबी, रोजगार का अभाव, ऑक्सीजन, चिकित्सकीय सुविधाओं का अभाव, बढ़ती महँगाई की मार आदि ने संतृप्त किया है। मानसिक उलझनें दी हैं। संग्रह की अन्य कविताएँ जीवन के विविध पक्षों से जुड़ी हुई हैं। जो पूरे सामाजिक-राजनीतिक विन्यास को व्यक्त करती हैं।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं, कि 'लॉकडाउन' की कविताएँ न केवल कोरोनाकाल में उपजी विविध प्रकार की विसंगतियों का शब्द चित्र हैं। अपितु समकालीन सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों का निरपेक्ष व तटस्थ विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। कवि शरद आलोक ने आम आदमी के संघर्ष और समस्या से जुड़े प्रश्नों को सरल, सहज आम आदमी की भाषा में ही उठाया है। उनकी सभी कविताएँ देश के सुखद भविष्य की कामना से जुड़ी हुई प्रतीत होती हैं। इस कविता के माध्यम से कवि ने वैश्विक मानवीय समस्या और चिन्ताओं को स्वर देने का एक बेहतरीन प्रयास किया है।

भ्रष्टाचार, गरीबी और अशिक्षा बड़ी समस्याएं

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक'

संगठित कार्य, स्वःजागरण और सहकारिता से आपकी समस्याएं कम हो सकती हैं।

इस लेख का शीर्षक एक ऐसे मंत्र की तरह है जो हमारे पास है पर हम प्रयोग कम ही करते हैं। वह है हमारी संगठन शक्ति, श्रमदान और सहकारिता भावना से। इसी के साथ यह भी सोचने लगें कि हम अपने समाज और देश के साथ अपना और अपने देशवासियों का दुख दर्द कैसे मिलकर बाँट सकते हैं तो रास्ते आसान और आपकी समस्याएं भी कम हो जायेंगी।

यूरोप के विकसित देशों में इन मन्त्रों का पाठ स्कूलों के अतिरिक्त आम जीवन में कार्य स्थलों के अलावा, मोहल्ले और बस्ती में रोज प्रयोग में लाया जाता है इसी लिए वे समृद्ध तो हैं ही साथ ही शिक्षा, स्वास्थ, यातायात की उत्तम व्यवस्था, मार्ग, पास-पड़ोस, दुकान-मकानों, पार्कों पर सफाई रहती है। यहाँ तक जो व्यक्ति कुत्ता पालता है और बाहर जाता है वह अपने साथ कुत्ते का मैला उठाने के लिए थैला लेकर चलता है और कुत्ते के मल करने पर उसे वह दास्ताने पहने उसे उठाकर थैले में बन्द करके कूड़ेदान में फेंक देता है। पर ध्यान रखियेः

'हाथ पर हाथ रखकर
कभी कुछ होना नहीं।
काटना क्यों चाहते हो नई फसल,
जब तुम्हें बोना नहीं।'

अपने रहन सहन का स्तर बढ़ाएं और अपने कार्य को संगठित करें तो आपकी समस्याएं बहुत हद तक कम हो सकतीं हैं।

भ्रष्टाचार, गरीबी और अशिक्षा बड़ी समस्याएं

आज पूरे विश्व के विकासशील और अविकसित देशों में अनेक मुद्दे बहुत गर्म हैं जिसमें भ्रष्टाचार प्रथम स्थान पर गरीबी दूसरे और बेरोजगारी तीसरे स्थान पर है।

११००० लोगों के एक सर्वे के अनुसार एक चौथाई लोग भ्रष्टाचार पर बातचीत कर चुके हैं। अभी हाल ही में मैंने तीन सप्ताह लखनऊ, उन्नाव, दिल्ली और देहरादून की यात्रा की। इन जगहों पर मैंने रिक्शा चालक, टैक्सी चालक, सड़क पर चलने वाले आम आदमी से लेकर मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों से पूछा कि कौन सा मुद्दा इनकी नजर में महत्वपूर्ण है।

इनमें से अधिकाँश लोगों ने भ्रष्टाचार को प्रमुख बताया और अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार कम होने की आशा की किरण इन अनगिनत लोगों की आँखे बेसब्री से देख रही हैं।

इसमें पचास प्रतिशत से अधिक लोग आशावादी थे और इनका मानना था कि अन्ना के जन लोकपाल से भ्रष्टाचार को कम करने में आसानी होगी।

महंगाई दूसरा विषय था इस विषय पर लोग बातचीत करते दिखे। महंगाई में सबसे ज्यादा खाद्य पदार्थों और पेट्रोल के बाद मध्यमवर्गीय लोगों ने अपने बच्चों की शिक्षा को बहुत महंगा बताया। आम लोगों ने खाद्य पदार्थों के महंगे होने और चिकित्सा कराने को असंभव बताया। अब बात यह उठती है कि अविकसित और विकासशील देशों में जहाँ सभी को ज्ञात है कि आम समस्याएं क्या हैं। ठोस उपाए क्यों नहीं किये जा रहे हैं?

साक्षरता बहुत जरूरी है?

भारत और अन्य विकासशील और अविकसित देशों में १०० प्रतिशत साक्षरता क्यों नहीं है? स्कूलों में प्रायोगिक शिक्षा का अभाव क्यों है? कर (टैक्स) प्रणाली में अमीरों को अधिक छूट क्यों है? व्यवस्था सभी को न्यायपूर्ण और सबके लिए एक जैसी क्यों नहीं लगती जबकि संविधान सभी को एक सामान अधिकार देता है। अधिकार के साथ हम कर्तव्य क्यों भूल जाते हैं। अक्सर देखने में आया है कि प्रायः मकान खरीदने पर आधे से अधिक काले धन के रूप में भुगतान क्यों किया जाता है जबकि बहुत ज्यादा ब्याज होने पर खरीददार को रकम पूरी चुकानी पड़ती है। आखिर क्यों? अब विचार यह उठता है कि क्या हम स्वयं आपस में मिलकर बिना जोर जबरदस्ती से समस्याएं हल कर सकते हैं? उत्तर सकारात्मक है और हाँ है। यह बहुत संतोषजनक बात कही जा सकती है।

अब प्रश्न यह उठता है कि किस तरह अपनी रोजमर्रा की परेशानियों और कुछ दूरगामी परेशानियों को कैसे दूर करें। यदि हम पहल करें राह आसान हो जायेगी समस्याओं के समाधान का रास्ता स्वयं खोजना होगा।

कोई काम छोटा नहीं होता

कोई काम छोटा नहीं होता। कर्म को सबसे बड़ा धर्म कहा गया है। गांधी जी अपना शौंचालय स्वयं साफ़ कारते थे। यही पश्चिम देशों के सभी लोग करते हैं और वह अपना शौंचालय, पास पड़ोस स्वयं साफ़ करते हैं।

यदि एक कार्य को अकेले करना असंभव हो तो उस समस्या से जूझने वाले अनेक लोगों को एकजुट होकर सहकारिता भाव से कार्य करना होगा। उदाहरण के तौर पर आसपास की सफाई। माता-पिता मिलजुल कर एक शाम का केंद्र बच्चों के लिए खोलें जिसमें पढ़े लिखे लोग बच्चों को स्कूल का होमवर्क कराएं और उन्हें ट्यूशन पढ़ायें। जो माता-पिता पढ़ा नहीं सकते वह अपना उतना ही समय अन्य समस्याओं में खर्च करें। इस तरह आपस में मेलजोल बढ़ेगा और बच्चों को निःशुल्क अथवा कम मूल्य पर ट्यूशन पढ़ने का अवसर मिलेगा।

जिस जगह बरसात में पानी भरने और कूड़े से गंदगी की समस्या हो तो पर्यावरण का अध्ययन करके या सम्बंधित विभाग से मिलकर सूचनाओं के लिए आम सभा करें और गंदगी, बीमारियों से बचने तथा कूड़ा को किस तरह कम करें और उसे किस तरह दोबारा प्रयोग के लिए साफ़ सुथरे तरीके से अलग-अलग एकत्र करें और सही स्थान पर पहुंचाएं।

बिजली की समस्या के लिए सौर ऊर्जा और सामूहिक शौंचालय से गैस उत्पादन से भी कुछ हद तक ईधन की समस्या का समाधान हो सकता है।

भारत के विकास के लिए गाँव का विकास बहुत जरूरी

गाँव में साक्षरता बहुत जरूरी है। पुरुष और स्त्री दोनों को साक्षर होना होगा और अपने गाँव के विकास में मिल जुलकर सहयोग देना होगा। महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा व्यवस्था महिलाओं द्वारा संचालित करना और उन्हें साक्षर

बनाना बहुत जरूरी है। पहले एक व्यक्ति के कार्य करने से घर का खर्चा चल जाता था पर आज स्त्री पुरुष दोनों को कार्य करना पड़ेगा।

सभी ग्रामवासियों और गाँव में मजदूरी और खेती करने वालों की शिक्षा और सुरक्षा का प्रबंध तो किया ही जाना चाहिए किन्तु उनके बच्चों की देखभाल और उचित सुरक्षित शिक्षा का प्रबंध तथा उनको भोजन की व्यवस्था होनी चाहिए।

यह संभव है कि यदि कोई समाजसेवी आगे आकर अगुवाई करे और सहकारिता भाव से शिक्षित करे और संगठित होकर कार्य करे। राशन की दुकानों के सहकारिता से मालिक बना जा सकता है जिसमें उचित मूल्य पर राशन उपलब्ध हो सकता है।

यदि ऐसा नहीं किया गया तो गरीब और ज्यादा गरीब, मध्यमवर्गीय जीवन भर संघर्ष करेगा बिना सुख-चैन पाए हुए। कुछ ही प्रतिशत लोग अच्छी तरह अपना काम-काज चला सकेंगे।

सहकारिता भाव से आपके मन में उच्चतर स्तर बनाने के विचार आयेंगे और उस पर आप कार्य करेंगे। आप बहुत हद तक बहुत सा रोजगार स्वयं पैदा करेंगे।

आरक्षण मृग तृष्णा है जो समाधान नहीं है

सरकारों द्वारा आरक्षण नीति के तहत एक प्रतिशत लोगों का भी भला नहीं होने वाला है ऐसा विशेषज्ञों का मानना है। हाँ अखबार और मीडिया के माध्यमों से आरक्षण का जाल बहुत सुहावना दिखता है पर यह समाधान आंशिक से भी कम है, यह अर्थशास्त्रियों का भी मानना है। सभी देशवासियों को साक्षर करने की आवश्यकता है। उन्हें स्किल्ड और सेमीस्किल्ड कार्य के लिए प्रशिक्षित करने की जरूरत है। महंगे यंत्रों और मशीनों के मालिक होकर हम उसके कारीगर नहीं बन जाते।

सहकारिता एक बड़ा विकल्प

भारत और तीसरी दुनिया के सभी लोगों को कार्य में लगना होगा अपनी क्षमता के अनुसार। जो कार्य नहीं कर सकते हैं और कमजोर हैं उन्हें मदद देनी चाहिये। कुछ को शुरू में बिना पारिश्रमिक के कार्य करना होगा। पर सहकारिता से खोले गए स्कूल, बालवाड़ी और लघु उद्योग में शुरू में यदि बिना पैसे या कम पैसों के ही कार्य करना भी पड़े तो धन सामूहिक रूप से ही बढ़ेगा और लागत कम आयेगी। नहीं तो आने वाले दिनों में बड़े उद्योग आम लोगों की जिन्दगी पर बहुत भारी पड़ जायेंगे, तो आश्चर्य की बात नहीं होगी। सहकारिता से राशन की दुकान खोलना नहीं भूलिए इस बारे में ऊपर लिखा जा चुका है। बहुतों को अपने और अपने परिवार के पालन-पोषण, चिकित्सा और न्यायपालिका में अपनी रही सही पूंजी कुर्बान करनी पड़ सकती है।

समय रहते चेतने की जरूरत है। अर्थशास्त्री युनुस और अमर्त्य सेन आपके पास है उनकी सलाह है फिर भी हमारी गरीबी कम न हो पाए तो कोई क्या कर सकता है। आइये जुट जाइए सहकारिता भाव से मिलजुलकर अपनी सामूहिक समस्याओं को सुलझाइए। अपना जीवन सुखी और सफल बनाइये।

हल किये बिना समस्याएं पड़ेंगी भारी। आज हमारी तो कल तुम्हारी बारी है।

डॉ. महेश दिवाकर को साहित्य भूषण सम्मान

शिक्षाविद् एवं लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेश 'दिवाकर' का जन्म २५ जनवरी १९५२ को मुरादाबाद में हुआ।

डॉ. दिवाकर अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य कला मंच के संस्थापक-अध्यक्ष हैं। ४० वर्षों के उल्लेखनीय अध्यापन सेवा के बाद वर्तमान में जे. जे. टी. वि. वि. झुंझुनू (राज.) में प्रोफेसर एमेरिट्स हैं।

इन्होंने तकरीबन ५० छात्र-छात्राओं के शोध एवं २०० छात्र-छात्राओं के लघु शोध का निर्देशन किया है।

आप छात्र जीवन से ही सामाजिक कार्यों से ही जुड़े है। हिंदी साहित्य को १२० पुस्तकें समर्पित करके इन्होंने एक प्रतिमान स्थापित किया है। आपके साहित्यिक अवदान पर अब तक ६ बार शोध और दर्जनों बार लघु शोध हो चुका है। डॉ. महेश दिवाकर ने अब तक ३० देशों की साहित्यिक सांस्कृतिक यात्रायें की हैं।

डॉ. दिवाकर हिन्दुस्तानी अकादमी (प्रयागराज) के संयुक्त सचिव एवं केंद्रीय हिंदी सलाहकार समिति (भारत सरकार) के सदस्य भी रह चुके हैं।

उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान से विभूषित किए जाने के सुअवसर पर देश-विदेश के साहित्यकारों ने शुभकामनायें दी है।

डा. महेश दिवाकर जी ने कोरोना संक्रमण से विजय पायी।

स्पाइल-दर्पण पत्रिका डा. महेश दिवाकर जी के शतायु होने की कामना करती है।

मन का पंछी

अनुपमा

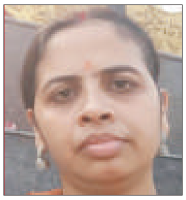

मन का पंछी, जीवन का आकाश
धरा की बेचैनियाँ, और समंदर।
समंदर के अथाह में तैरती
आस विश्वास की।
तसल्लियाँ
धैर्य की अनगिन मछलियाँ।
तटों पर, एक बार हो आओ
मन! हो सके तो,
समंदर हो जाओ !

जारवा औरत के बहाने

डॉ. सुनिता मच्छिंद्र मोटे
न्यू आर्टस्, कॉमर्स एंड साइन्स कॉलेज, अहमदनगर

विषय प्रवेश आदिवासी साहित्य

हिंदी साहित्य में विगत कुछ वर्षों से मराठी के प्रभाव रूप आत्मकथा जैसी विधा का उदय हुआ। आत्मकथा अपने भोगे हूए उपेक्षित वंचित यथार्थ जीवन की व्यंजना है। इस विधा के प्रभाव के कारण समाज के अनेक उपेक्षित, वंचित समूह अपने भोगे हूए यथार्थ को व्यक्त करने लगे। जिनमें आदिवासियों का समावेश है। हाशिए से बाहर रखे इन आदिवासियों ने अपनी स्वानुभूतियों की अभिव्यक्ति की है। इस साहित्य में आदिवासियों स्त्री का चित्रण भी बहुतायत से हुआ है। हरिराम मीणा की 'वह 'जारवा' औरत' एक ऐसी ही कविता है। इस कविता में चित्रित पुरूष की वासना का शिकार यह औरत पोर्टब्लेअर में मात्र एक तमाशा बन कर रही। पुरूष अपनी वासना का शमन कर मुक्त हो जाता है लेकिन स्त्री बलात्कार के बाद भी संयोगवश गर्भधारणा की अनंत यातनाएँ सहती है। इस अवांछित गर्भधारणा का दोष भी उसे ही दिया जाता है। समाज में अनेक समाज सुधारकों ने स्त्री जीवन के इस पक्ष को लेकर सुधार के लिए भरसक प्रयास किए। बतौर इसके परंपरागत रूढ़ मानसिकता से समाज मुक्त न हो सका। कविता में उल्लेखित जारवा औरत इसी सवाल से जूझ रही है।

बीजशब्द यौन उत्पीड़न, बलात्कार, यौन शुचिता, अवांछित गर्भधारणा, विवशता, निष्कासन, अस्मिता, जड़ता भावरिक्तता, हरिराम मीणा, रमणिका गुप्ता

'' वह आयी नहीं थी/आ ही नहीं सकती थी
वह/आखेट के दौरान रूकी थी
प्रसव वेदना से/उसकी टोली निकल गई थी
आगे .....।"१

प्रसव वेदना का काल स्त्री के लिए जीवन-मृत्यू की सीमा रेखा का काल होता है। शिकार के दौरान अपनी टोली के साथ होने वाली यह औरत प्रसव पीड़ा के कारण रूकी थी। शिकार के पीछे या बाहरी दबाव के कारण उसकी टोली आगे निकल गयी थी। उसकी इस स्थिति में न उसे उसके टोलीवालों में से किसी ने देखा और न ही हममें से किसी और ने यह कविता पढ़ते समय स्त्री जीवन के विविध आयाम मेरी नजर के सामने आये। आदिवासी स्त्रियों का जीवन यथार्थ इस कविता के बहाने मैं अनुभव करने लगी। जब हम नारी विमर्श के विविध आयामों पर गौर करते हैं तो अनुभव होता हैं कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक स्त्री उत्पीड़न एक आम समस्या है। औरत के लिए न घर महफूस हैं न दुनिया। यह उत्पीड़न घर के चार दिवारी के अंदर और बाहर भी होता है। यह उत्पीड़न अधिकतम उसे आर्थिक स्तर पर अवलंबित होता है। निम्नवर्ग तथा आदिवासी स्त्री इस दोहरे उत्पीड़न को सहती है। "मजदूर, आदिवासी तथा दलित स्त्रियाँ एक ऐसा तबका हैं जो स्त्रियों में भी सबसे ज्यादा विषम परिस्थितियों में भेदभाव और शोषण का शिकार होती हैं।"२ रोजी-रोटी के लिए बाहरी दुनिया के साथ जुड़नेवाली औरतों को विवशवश सब सहना पड़ता है। मेहनत, मजदूरी करनेवाली नारियाँ गाँव के जमींदार, ठेकेदार तथा सरकारी कर्मियों के अत्याचार को सहती है। "इन दलित या आदिवासी महिलाओं के श्रम के शोषण के साथ-साथ एक और बात जुड़ी हैं और वह है उनका यौन शोषण। आर्थिक या जातिगत स्तर का हाशिया इनके श्रम के साथ-साथ इन महिलाओं के शरीर को भी उपभोग की वस्तु में बदल देता है।"३

ऐसा नहीं हैं कि स्त्री के इस उत्पीड़न के बारे में इसके पूर्व किसी ने चिंतन नहीं किया। बल्कि अनेक साहित्यकार, चिंतक, समाज-सुधारक, विविध संगठनों ने समय-समय पर अपने-अपने स्तरों पर उत्पीड़न से मुक्ति के लिए प्रयास किए है। मुझे वह आदिवासी स्त्री चिंतित करती है; जिसे प्रसव काल के दौरान भी स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है। यह स्त्री जिस परिवेश के साथ जुड़ी है, वह अंधविश्वास, रूढ़ि, परंपराओं से आबद्ध है। डॉ रमणिका गुप्ता जी जैसी अनेक हस्तियाँ दिन-रात इन आदिवासी जनों के कर्मरत है। इनके ही कर्मयोग का प्रतिफलन 'आदिवासी स्वर और नई शताब्दी' यह आदिवासी साहित्यकारों की रचनाओं का संकलन है। 'वह' जारवा 'औरत' इस संकलन में संकलित कविता है। इसमें आदिवासी स्त्री की स्थिति अंकित है। इस स्त्री का कठिनाईयों भरा जीवन, अशिक्षा, शोषण तथा उपेक्षा व्यक्त हुई है। इस संकलन में अन्य कविताएँ भी है, जो आदिवासी स्त्री के जीवन यथार्थ को स्वर देती है, इन कवियों में शंकर लाल मीना, महादेव टोप्पो, ग्रेस कुजुर, सहदेव सोरी, मीरा रामनिवास, डॉ. रामदयाल मुंडा, हरिराम मीणा, सरिता सिंह का नामोल्लेख किया जा सकता है। इन कवियों की अनेक कविताएँ आदिवासी स्त्री के उत्पीड़न को व्यक्त करती दृष्टिगोचर होती है। वैसे तो आदिवासी स्त्री की स्वतंत्रता के संदर्भ में मतवैभिन्य दृष्टिगोचर होता है। आदिवासी सृजनकारों के जीवंत अनुभवों को हम पढ़ते है तो उस पर गौर करना आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य है। इन स्त्रियों की स्थिति अन्य स्त्रियों के जैसी ही है, बिटिया मुर्मु का कथन इस संदर्भ में विचारणीय हैं। वह कहती है कि "भारत की संस्कृति में महिलाओं की जो स्थिति है आदिवासी महिलाओं की स्थिति उससे भिन्न नहीं है।"४ उनके कथन की पुष्टी इस पुस्तक में संकलित अनेक कविताओं से होती है। इन्हें पढ़ने के बाद निश्चय ही आदिवासी स्त्री के जीवन स्थिति पर दो राय नहीं हो सकती।

इसमें रूढ़ी-परंपराओं में आबद्ध बुधनी है, जारवा औरत हैं। बाप-बेटी, अपराध-बोध, बेटी और नागफणी यह कविताएँ आदिवासी स्त्री की जीवन व्यथा को सशक्त रूप से व्यक्त करती है। स्त्री के मनुष्यत्व को नकारने वाली व्यवस्था उसे मनुष्य की तरह कहाँ जीने देती है? 'वह' जारवा 'औरत' कवि हरिराम मीणा की कविता है। इस संकलन में संकलित यह कविता पोर्टब्लेयर के आस-पास के परिवेश को चित्रित करती है। उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में उल्लेखित औरत प्रसव पीड़ा के कारण आखेट के दौरान रूकी थी। उसे किसी ने देखा नहीं। फिर वह पोर्टब्लेयर के अस्पताल में थी। उसे प्रसव में किसी तरह की तकलीफ नहीं हुई। सद्य-जनी अपनी नन्हीं बच्ची को लेकर वहाँ से(अस्पताल) जाने लगी लेकिन उसे रोका गया-

''फिर वह पोर्टब्लेयर के अस्पताल में थी/प्रसव में कोई तकलीफ नहीं हुई/सद्य-जनी नन्हीं बच्ची

लेकर/वह जाने लगी/तो रोक ली गई ठहरा दी गई चौकीदार के घर में"५

इच्छा के विरूद्ध चौकीदार के घर में ठहराई गयी यह औरत यौन उत्पीड़न का शिकार हुई। कुछ दिनों पश्चात वह वहाँ से चली गयी। कोई उसे रोक न सका। वह फिर से अपने लोगों के साथ प्रकृति के क्रोड़ में मुक्त जीवन जीना चाहती थी। लेकिन उसे उसके लोगों ने स्वीकारा नहीं। जिस तरह नागरीय सभ्यता में बलात्कारित नारी परिवार और समाज में उपेक्षा का पात्र बनती है उसी तरह यह आदिवासी स्त्री यौन शुचिता की भावना के कारण उपेक्षा का पात्र बन गयी। यौन शुचिता की रूढ़ मानसिकता के कारण उसे स्वीकारा नहीं गया। बिना अपराध यह स्त्री उपेक्षा का दर्द सहने के लिए विवश है-

"पर जाना ही था उसे /इसलिए रोक नहीं सका कोई/और वह चली गई/वहीं जहां से लाया गया था उसे/वह जब तक रही एक तमाशा बन कर रही/पोर्टब्लेयर में/नहीं स्वीकारा उसे उसके लोगों ने/वह पुनः गर्भवती जो थी......।"६

पुरूष की वासना का शिकार यह औरत पोर्टब्लेयर में मात्र एक तमाशा बन कर रही। पुरूष अपनी वासना का शमन कर मुक्त हो जाता है लेकिन स्त्री बलात्कार के बाद भी संयोगवश गर्भधारणा की अनंत यातनाएं सहती है। इस अवांछित गर्भधारणा का दोष भी उसे ही दिया जाता है। समाज में अनेक समाज सुधारकों ने स्त्री जीवन के इस पक्ष को लेकर सुधार के लिए भरसक प्रयास किए। बतौर इसके परंपरागत रूढ़ मानसिकता से समाज मुक्त न हो सका। कविता में उल्लेखित जारवा औरत इसी सवाल से जूझ रही है। अवांछित गर्भ का भार ढोने वाली औरत अपना सब कुछ खो देती है। कवि ने उसकी मानसिक पीड़ा को निम्नांकित रूप में व्यक्त किया है-

"पर मारा-पीटा नहीं गया उसे/कोई सजा भी नहीं दी/वह बहुत रोई/बहुत गिड़गिड़ाई/मेरा कोई दोष नहीं..../मैंने कोई पाप नहीं किया/जो कुछ किया चौकीदार ने किया"७

जारवा औरत को उसकी टोली निष्कासित करती है। बलात्कार, अवांछित गर्भ और अपनी टोली से निष्कासन के तिहरे दर्द को सह रही यह औरत रोती है, गिड़गिड़ाती है लेकिन उसे समझने की मानसिकता किसी के पास नहीं है। उपेक्षा और अकेलेपन का दर्द सहने वाली स्त्री हमारी दोगली संस्कृति पर प्रश्नचिन्ह निर्माण करती है। इस स्त्री के बहाने से हम समस्त स्त्री वर्ग के साथ जुड़ी इस समस्या पर गौर कर सकते है तो अनुभव कर सकते है कि बलात्कार के साथ इन अवांछित संबंधों से जन्में बच्चे के पुनर्वसन का प्रश्न भी उतना ही गंभीर है। इस औरत का पुनर्वसन करने की अपेक्षा उसे निष्कासित करना एक नारी की अनकही व्यथा है। टोली का उसे नकार कर अकेला छोड़ कर जाना नारी जीवन की विडंबना है। कहाँ जाये? इस संभ्रम की स्थिति में वह फिर पोर्टब्लेयर आ पहुँची। बंद हुए दरवाजे उसके रोने, गिड़गिड़ाने से नहीं खुले। यह औरत अब निकोबार में एक क्रिश्चियन मिशनरी में है। अब एक और बच्चे की माँ होने वाली यह औरत अपने दोनों बच्चों के साथ स्वयं भी पढ़ती है। उसके रहन-सहन में बदलाव आया है। अब वह लोगों से बातचीत कर सकती है। कपड़े पहना करती है। लेकिन अपनी टोली से बिछड़ने के बाद वह उदास है। न तो बच्चों में उसका मन रमता हैं और न ही उसे नगरीय सभ्यता भायी है।

इस जारवा औरत को आज पांच वर्षों के बाद भी अपने पूर्व काल की चाह है। उसे अब उन दिनों के सपने आते है। अनेकों बार वह बेहोश हो जाती है। उसे अपनी टोली, आखेट, नारियल के पेड़ों पर चढ़ना आदि सब कुछ याद आता है। बलात्कार के बाद अचानक उसका जीवन एक अलग मोड़ पर उसे ले आया; उसकी इच्छा के विरूद्ध! उसे न किए गुनाह की सजा दी जाती है। उसका भाव विश्व ही तहस-नहस कर दिया गया है। हमारे समाज में बलात्कारित स्त्री के पुर्नवसन की एक गहन समस्या है। आदिवासी स्त्री इससे अपवाद नहीं है। अवांछित गर्भधारणा का जख्म रीसता रहता है और वह चुपचाप सब सहने को विवश है। प्राचीन काल से अब तक अनेक नारियाँ यौन उत्पीड़न का शिकार होकर भाव रिक्तता की स्थिती में पहुँची यह औरत हमें अंर्तमुख करती है।

निष्कर्ष- स्त्री की इस स्थिति को हम अनदेखा कैसे कर सकते है? उसे इस स्थिति में लाने के लिए जिम्मेदार घटकों में परिवार और समाज द्वारा निर्मित परिवेश है। बलात्कार के बाद चरित्र-लांछन, यौन शुचिता की क्षुद्र मानसिकता उसका जीना दूभर करती है। इस स्थिति को हमें बदलना पड़ेगा तथा उसके पुर्नवसन का प्रयास उसके परिवार के साथ सबको मिलकर करने की आवश्यकता है। सबके द्वारा किए गए सम्यक प्रयास इस स्थिति में बदलाव कर सकते है। स्त्री को उपभोग की वस्तु समझने की अपेक्षा उसके मनुष्यत्व को स्वीकार कर उसके साथ मनुष्य की तरह व्यवहार करते हैं, तो हँसती-खेलती चेतना यूँ भाव रिक्तता की स्थिति में नहीं आयेगी। हमें हमारी यौन शुचिता की रूढ़ मानसिकता बदलनी होगी। हमें उस दिशा में पहल करनी होगी ताकि हम उसकी अस्मत और अस्मिता को बरकरार रखें।

संदर्भ

१ आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- सं रमणिका गुप्ता पृ ३२
२ आदिवासी समाज में सामाजिक परिवर्तन- हिरेन जे बारोट पृ २२१
३ वही पृ २२२
४ वही पृ २२६
५ आदिवासी स्वर और नई शताब्दी- सं रमणिका गुप्ता पृ ३२
६ वही पृ ३२
७ वही पृ ३२

धर्म-मुफ्त में लूटने की दुकानें हैं

डॉ. आर.बी. गौतम

धर्म-मुफ्त में लूटने की दुकानें हैं,
करोना में आज हम पछतानें हैं।

धर्म के धंधों की वो पोल खुली है,
मक्का-मदीना-मंदिर अनजाने है।

साथ-संकट की घड़ी में छोड़ा है,
भगवानों को मास्क क्यों लगानें हैं?

गैलीलियों कहा पृथ्वी घूमती है,
बेटीकान सब-अंधा बखाने हैं।

भगवान परिकथा-झूठा विश्वास है,
अशिक्षित-स्त्री सभी यहाँ दीवाने हैं।

अंतरिक्ष में ये स्वर्ग मिलता नहीं है,
फिर भी 'गौतम' जाने-अनजाने हैं।

विश्व का सबसे बड़ा कविसम्मेलन

६ महाद्वीपों से ५० देशों के ७५ कवियों ने भाग लिया

१५ अगस्त २०२१, नारनौल, हरियाणा। स्वाधीनता दिवस पर डिजिटल मंच पर डॉ. राम निवास मानव एवं अमेरिका से अनुकृति के नेतृत्व मे मनमुक्त मानव ट्रस्ट द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

नार्वे से प्रकाशित स्पाइल-दर्पण पत्रिका और देशबंधु राष्ट्रीय समाचार पत्र के यूरोप सम्पादक सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने इस कवि सम्मेलन को ऐतिहासिक बताया।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की सहायक निदेशक डॉ. नूतन पांडेय की अध्यक्षता में संपन्न हुए प्रथम सत्र में अंतरराष्ट्रीय संबंध परिषद, नई दिल्ली के निदेशक नारायण कुमार मुख्य अतिथि तथा आईबी के पूर्व सहायक निदेशक तथा पटियाला (पंजाब) के वरिष्ठ कवि नरेश नाज विशिष्ट अतिथि रहे। वीबीएस पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उत्तर प्रदेश) की कुलपति डॉ. निर्मला एस मौर्य की अध्यक्षता में आयोजित द्वितीय सत्र में हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला के कुलाधिपति डॉ. एचएस बेदी मुख्य अतिथि और सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी (राजस्थान) के कुलपति डॉ. उमाशंकर यादव विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। इसी प्रकार केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली के सहायक निदेशक डॉ. दीपक पांडेय की अध्यक्षता में आयोजित तृतीय सत्र में मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल के निदेशक डॉ. विकास दवे ने मुख्य अतिथि और विश्व हिंदी सचिवालय, मोका (मॉरीशस) की उप-महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में सहभागिता की।

कवि-सम्मेलन के विभिन्न सत्रों का कुशल संचालन डॉ. पंकज गौड़, डॉ. जितेंद्र भारद्वाज और उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी' ने किया उल्लेखनीय है कि इस कवि-सम्मेलन को विश्व के सबसे बड़े कवि-सम्मेलन के रूप में विश्व रिकॉर्ड बुक में भी दर्ज किया जा रहा है।

कवियों की सहभागिताः इस ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण कवि-सम्मेलन में विश्व के जिन कवियों को सहभागिता करने का गौरव प्राप्त हुआ, उनमें जापान से डॉ. रमा पूर्णिमा शर्मा (टोक्यो), फिजी से सुएता दत्त चौधरी (नौसोरी) और अमित अहलावत (सुवा), ऑस्ट्रेलिया से डॉ. उर्मिला मिश्रा (मेलबर्न), रेखा राजवंशी और डॉ. भावना कुंअर (सिडनी), न्यूजीलैंड से रोहित कुमार 'हैप्पी' (ऑकलैंड), वियतनाम से साधना सक्सेना (होचिमिन्ह सिटी), फिलीपींस से प्रिया शुक्ला (मनीला), थाईलैंड से शिखा रस्तोगी (बैंकॉक), इंडोनेशिया से आशीष शर्मा (मेडान), मलेशिया से मनीषा श्री (कुवालालंपुर), सिंगापुर से चित्रगुप्ता और आराधना श्रीवास्तव (सिंगापुर सिटी), चीन से हरप्रीतसिंह पुरी (तियानजिन), नेपाल से डॉ. श्वेता दीप्ति और डॉ. पुष्करराज भट्ट (काठमांडू), रामचंद्र नेपाल (कंचनपुर) और हरीशप्रसाद जोशी (महेंद्रनगर), भारत से नरेश नाज (पटियाला), डॉ. रमाकांत शर्मा और डॉ. सुशीला आर्य (भिवानी), प्रेम विज (चंडीगढ़), उर्वशी अग्रवाल 'उर्वी', राकेश भ्रमर और डॉ. नीलम वर्मा (नई दिल्ली), डॉ. अंजीव अंजुम (मथुरा), डॉ. उर्मिला पोरवाल (बेंगलुरु), संजय पाठक (अलवर) तथा डॉ. रामनिवास 'मानव', डॉ. जितेंद्र भारद्वाज और डॉ. पंकज गौड़ (नारनौल), भूटान से अर्चना ठाकुर (थिंफू), बांग्लादेश से शमीम बानो (ढाका), श्रीलंका से डॉ. अंजलि मिश्रा (कोलंबो), ओमान से तुफैल अहमद (मस्कट), यूएई से ललिता मिश्रा (आबूधाबी) और डॉ. नितिन उपाध्ये (दुबई), कतर से डॉ. मानसी शर्मा और बैजनाथ शर्मा (दोहा), बहरीन से अनुपम रमेश (मनामा), कुवैत से नाजनीन अली 'नाज' (कुवैत सिटी), जॉर्डन से रूपा घोष (अम्मान), मॉरीशस से कल्पना लालजी और आरती हेमराज (मोका), केन्या से मनीषा कंठालिया (नैरोबी), युगांडा से बसंत भंभेरू (कंपाला) तंजानिया से अजय गोयल (दार-ए-सलाम), नाईजीरिया से राखी विलंनदानी (लागोस), घाना से मीनाक्षी सौरभ (अकरा), दक्षिण अफ्रीका से उषा शुक्ला (डरबन) और झरना दीक्षित (जोहान्सबर्ग), रूस से श्वेता सिंह और प्रगति टिपनिस (मास्को), यूक्रेन से डॉ. यूरी बोत्विंकिन (कीव), बल्गारिया से डॉ. मौना कौशिक (सोफिया), स्वीडन से सुरेश पांडे (स्टॉकहोम), नॉर्वे से डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल (ओस्लो), डेनमार्क से कृष्णा वर्मा (कोपनहेगन), जर्मनी से डॉ. शिप्रा शिल्पी (कोलोन), नीदरलैंड से डॉ. पुष्पिता अवस्थी (एमस्टरडम), बैल्जियम से कपिल कुमार (ब्रसेल्स), लक्जमबर्ग से मनीष पांडेय (लक्जमबर्ग सिटी), ऑस्ट्रिया से अमिता लुग्गर (विएना), इटली से उर्मिला चक्रवर्ती (मिलान), फ्रांस से सविता जाखड़ (पेरिस), पुर्तगाल से डॉ. शिवकुमार सिंह (लिस्बन), ब्रिटेन से तेजेंद्र शर्मा और आशीष मिश्रा (लंदन), आयरलैंड से डॉ. अभिषेक त्रिपाठी (डबलिन), सूरीनाम से सुषमा खेदू और तेजप्रताप खेदू (लैडिंग) तथा धीरज कांधाई (पारामारिबो), त्रिनिडाड से डॉ. शिवकुमार निगम और आशा मोर (पोर्ट ऑफ स्पेन), अमेरिका से डॉ. श्वेता सिन्हा (आयोवा), डॉ. कमला सिंह (सैनडियागो) और अर्चना पांडा (कैलिफोर्निया) तथा कनाडा से डह शैलजा सक्सेना (टोरोंटो) और प्राची चतुर्वेदी रंधावा (वेंकूवर) के नाम सम्मिलित हैं।

बच्चे

संगीता शुक्ला

कौन कहता है
बच्चे कम अधिकार वाले हैं।
क्या इसलिए कि वह छोटे हैं?
कतई नहीं।

वह हमारे और तुम्हारे बराबर हैं,
वैसे ही जैसे व्यस्क लोग हैं।

बाल अधिकारों पर
कन्वेंशन सुना है?
यह सभी बच्चों के
अधिकार को बताता है।

यादों के इंद्रधनुष

समीक्षा - ओम सापरा

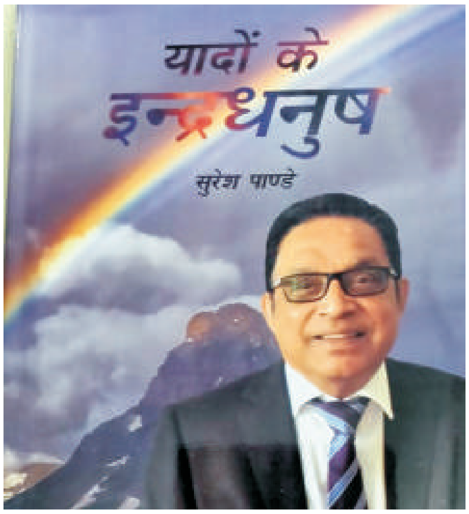

आपने एक अरसा पहले राज कपूर की एक फिल्म का एक दिलचस्प गीत सुना होगा ''मुम्बई से आया मेरा दोस्त, उसको सलाम करो !'' इसी तर्ज पर मैं आज यह कहूंगा ''स्वीडन से आाई मेरे एक दोस्त की किताब, आओ उसका स्वागत करें।'' दरअसल, आज से ४२ वर्ष पूर्व श्री सुरेश पांडे स्वीडन में बस गये थे। आप १९६९-१९७२ में हंसराज कालेज, दिल्ली के छात्र रहे और अंग्रेजी के प्रोफेसर कुलदीप सलिल के शिष्य भी। आपका जन्म १४ जुलाई, १९५३ को हुआ था।

आप कुछ वर्ष स्टेट बैंक आफ इंडिया, राजौरी, जम्मू में तथा इंडियन मेनेजमेंट डिवलपमेंट इंस्टीच्यूट, गुरूग्राम में भी सेवारत्त रहे। फिर यकायक, जीवन में आगे बढ़ने के लिये, अपने सपने साकार करने के लिये, वे परदेस चले गये। विश्व के सबसे बड़े नोबल पुरस्कार के नाम से विख्यात देश ''स्वीडन'' की अंतरंग स्मृतियों को समेटती हुई यह पुस्तक मुझे स्वीडन के सहृदय मित्र श्री सुरेश पांडे से प्राप्त हुई। उनसे फोन पर बात करके लगा कि मानो उनसे एक युग से अंतरंग परिचय हों। आपने बताया कि इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रो. आशुतोष तिवारी का विशेष सहयोग रहा। जीवन के इस खूबसूरत पड़ाव पर पहुंचकर लेखक को कितना सुखद महसूस होता है, यह इस पुस्तक को आद्योपांत पढ़कर सहज ही महसूस होता है। डा. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' इस पुस्तक की लेखन-प्रक्रिया के पीछे मुख्य प्रेरक रहे हैं। आपकी पंक्तियां प्रस्तुत हैंः-

''निरूत्तर आज सभी हैं प्रश्न,
प्रश्न का उत्तर केवल एक।
सूर्य है आज अकेला यहां,
अंधियारे के दीप अनेक।''

लेखक ने इस पुस्तक में एक स्थान पर लिखा है ''मुझे जो यहां आकर भी अपनी भाषा व अपनी संस्कृति विस्मृत नहीं होती और मैं यहां के जीवन में डूबकर भी अपनी भारतीय संस्कृति में ही गोते लगाता हूं। उसके भी अपने कारण है। वैदिक युग से मैं बहुत ही प्रभवित हूं। वेदों मे कही गई बातों को मैं सभी देशों और कालों के लिये प्रमाणित समझता हूं। मेरे पिताजी कहा करते थे - 'सुरिया! कभी मौका मिले, तो वेदों का अध्ययन करना। उसमें कही गई बातें शाश्वत और सत्य हैं। ''

''सभ्यता और संस्कृति का आधिभौतिक पक्ष है, तो भारत में इस पक्ष का अधिक विकास आर्यों ने किया है। इसी प्रकार भारतीय साहित्य के भीतर भावुकता की तरंग, अधिकतर आर्य-स्वभाव के भावुक होने के कारण बढ़ी। किंतु, भारतीय संस्कृति की कई कोमल विशिष्टतायें जैसे अहिंसा, सहिष्णुता और वैराग्य की भावना द्रविड़ स्वभाव के प्रभाव से विकसित हुई हैं। यह देश आर्यों के आगमन से पहले ही अहिंसक, अल्पसंतोषी और सहिष्णु रहता आया था। आर्यों ने आकर यहाँ भी जीवन की धूम मचा दी, प्रवृति और आशावाद के स्वर से सारे समाज को पूर्ण कर दिया।''

यहां लेखक ने अपनी भारतीय संस्कृति में गोते लगाने की अमूर्त भावना को व्यक्त किया है, जो परदेस में होने के कारण एक प्रवासी को मन में कहीं कचोटता रहता है, सहलाता रहता है और अपनी संस्कृति तथा अपने वतन की हरपल याद दिलाता है।

लेखक का यह भारत-प्रेम सचमुच ही वंदनीय है, स्तुत्य है। दूसरे संदर्भ में ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक महोदय ने एक ऐतिहासिक भूल की है तथा वे विकृत इतिहास-बोध से अनजाने में प्रभावित हो गये हैं। यहां लेखक ''आर्य'' शब्द की चर्चा करते हैं। वस्तुतः स्थिति यह है कि मूलतः आर्य भारत के मूल निवासी हैं और वे कहीं बाहर से आकर यहाँ नहीं बसे। यह बहुत सारे स्कालर और ऋषियों ने सिद्ध भी किया है।

आपने अपनी युवावस्था से लेकर, शादी, सुख-दुख, कालेज और नौकरी की स्मृतियां, नये व्यवसाय की चुनौतियां और जीवन के खट्टे-मीठे अनुभव, भारत आगमन और पिता की मृत्यु के शोकग्रस्त पल, सभी को अपनी कलम से कैद करने का प्रयास किया है। अगस्त, १९७९ में जब उन्हें अपने पिता की अकस्मात मृत्यु का समाचार मिला तो वे मानसिक तौर पर व्यथित हो गये। वे स्टाक-होम के इस्कान मंदिर के केंद्र में गये, जहां उत्तराखंड के एक ८० वर्षीय पंडित जोशी जी वहां का कार्य देखते थे। उन्होंने जब जाना कि सुरेश पांडे भी उत्तराखंड के हैं तो उन्होंने सुरेश पांडे जी को अपना परिवार का युवक मानकर उनको सांत्वना दी और कहा-देखो, सुरेश, ये संसार ऐसा ही है, सब कुछ प्रभु के हाथ में है। वही सब बातों के नियंता हैं और हम सब भी मनुष्य के रूप में अपने कर्मों का फल भुगतने को बाध्य हैं।'' आगे जोशी जी ने महाभारत की कथा का जिक्र करते हुए कहा, क्या कृष्ण सचमुच ईश्वर हैं। इसका विशुद्ध उत्तर कृष्ण स्वयं गीता में देते हैं। मूलतत्वों के रूप में महाभारत की कथा, ब्रह्मांड की सृष्टि, इसके सृष्टा और दैवीय के सृष्टाप्रयोजन के बारे में हैं। इसके लिये व्यास कृष्ण के रूप में एक ऐसे चरित्र की रचना करते हैं, जो सर्वशक्तिमान और नियामक हैं। परंतु मनुष्य के रूप में होने के कारण, इस नियंता की मनुष्यगत सीमायें भी हैं। जिनका अतिक्रमण वे नहीं कर सकते। मोहग्रस्त अर्जुन को अपना विराट रूप दिखाते हुए श्रीकृष्ण कहते हैंः- ''मैं ही अनादि सृष्टा और महाकाल हूँ, सृष्टि के समस्त जड़ और चेतन मुझ ही से उत्पन्न होकर, मुझ ही में समाहित हो जाते हैं।'' भय से रोमांचित अर्जुन को उनके जबड़ों में फंसे हुए सहस्त्रों एक से एक महायोद्धा और बाहुबली दिखते हैं। लेकिन सर्वशक्तिमान होते हुए भी श्रीकृष्ण अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिये एक-आध बार से अधिक अपनी दिव्य शक्तियों

का प्रयोग नहीं करते। कारण-कार्य-कारण की पद्धति से घटित होते इतिहास या कर्म के सिद्धांत के आधार पर अपना कर्मफल भोगते मनुष्य को उसकी नियति पर छोड़ देते हैं।

इस तरह इस पुस्तक में संस्मरण, पुरानी यादें, जीवन के उतार-चढ़ाव के साथ गंभीर जीवन-दर्शन के अमूल्य तत्वों का लेखक ने सफल विश्लेषण भी किया है। भाषा और शैली भी सशक्त है और पाठक को बांधे रखती है। पुस्तक का गैट-अप तथा कवर भी आकर्षक है। पुस्तक पठनीय है और इसके लिये माननीय भाई सुरेश पांडे साधुवाद और बधाई के पात्र हैं।

यूरोप में डिस्पोजेबल प्लास्टिक पर प्रतिबंध

जुलाई २०२१ में पूरे यूरोप में कई डिस्पोजेबल प्लास्टिक उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया जाएगा। घर पर कई स्टोर चेन गोदामों के खाली होने तक बिक्री जारी रखते हैं, और नाइट क्लब उनके पास जो कुछ भी है उसका उपयोग कर सकते हैं।

आपने देखा होगा कि प्लास्टिक के प्लेट और थाली को गत्ते के प्लेट और थाली में बदल दिया गया है, या टेक-अवे रेस्तरां में आपको मिलने वाली कटलरी लकड़ी से बनी है?

अब यह खुद को कई और जगहों पर मजबूर कर रहा है।

इस आने वाले सप्ताहांत में, यूरोपीय संघ के देश और नॉर्वे सहित यूरोपियन यूनियन देश कई डिस्पोजेबल प्लास्टिक उत्पादों के विपणन पर प्रतिबंध लगाएंगे।
पूरे यूरोप में समुद्र तटों पर बड़ी मात्रा में पाए जाने वाले कचरे की जांच के बाद सूची बनाई गई है।

- यह कुछ ऐसा है जिस पर यूरोप में पर्यावरण आंदोलन बहुत लंबे समय से काम कर रहा है। यह एक संकेत प्रभाव देता है कि आप वास्तव में व्यक्तिगत उत्पादों पर प्रतिबंध लगाते हैं जो आसानी से कूड़ेदान में योगदान करते हैं, नेचर कंजर्वेशन एसोसिएशन में विशेषज्ञ सलाहकार जोकिम सैंडविक गुलिकसेन कहते हैं।

प्रतिबंध का मतलब यह हो सकता है कि अकेले नॉर्वे में इन प्लास्टिक वस्तुओं के उपयोग में १.६ बिलियन यूनिट या सालाना ३६०० टन की कमी आई है।

अगर ध्यान न दिया गया तो विश्व के समुद्री किनारे प्लास्टिक से भर जायेंगे एवं समुद्री जीव-जन्तु का जीवन खतरे में पड़ जायेगा।

इला श्री जायसवाल की दो कवितायें

और ....

मुझे आंखों से पीता रहा
और मुंह मोड़ गया
जैसे हम कुछ थे ही नहीं

मुझे ग़ज़ल सा गाता रहा
और साज तोड़ गया
जैसे हम कुछ थे ही नहीं

मेरे रूप को सजाता रहा
और मांग उजाड़ गया
जैसे हम कुछ थे ही नहीं

मुझे खास बहुत जताता रहा
और बिन बोले छोड़ गया
जैसे हम कुछ थे नहीं

लौटकर आएगा या तन्हा ही रह जाएगा
हमको इतना भी पता नहीं
शायद
हम कुछ थे ही नहीं ।

सौगात

जाने कहां से वो तरकश लाए हैं
चुन चुन कर नए हथियार लाए है
हर तीर की अलग बात है देखो
बाणों की क्या खूब सौगात लाए हैं

कभी चुभ जाती है हमारी हंसी भी उनको
होठों की नरमी भी भाती नहीं उनको
बस चला देते कड़वे बोलों के वो तीर
आंखों में फिर अश्कों की बरसात लाए हैं
बाणों की क्या खूब सौगात लाए हैं
यूं तो रहते हैं दिल में हमारे,
जानते हैं सब राज हमारे
सब अच्छा बुरा जानते हैं ,
दर्द होगा कहां पहचानते हैं
चोट पहुंचाने को वो पत्थर साथ लाए हैं
बाणों की क्या खूब सौगात लाए हैं

कितने मंतर हमने फूंके,
जाने कैसे हम हैं चूकें
हर बार, प्यार का वार खाली गया
वो हर बार तरकश भर लाए है
हर तीर को और तराश लाए हैं
बाणों की क्या खूब सौगात लाए हैं

प्यार कितना सस्ता है ,
नफरत कितनी महंगी है
मिलती बंदूके कोने कोने में,
फूलों की कितनी तंगी है
आओ ना, कुछ खुशबुएं लेकर ,
महका दो गुलशन मेरा
प्रेम वर्षा हो कोने कोने में,
नए दिन रात लाए हैं
छोड़ो ना तड़पाना सताना
हम अपनी तरकश में
प्रेम सुमन भर लाए हैं
देखो ना, हम तुम्हारे लिए
क्या खूब सौगात लाए हैं
देखो ना, हम तुम्हारे लिए
क्या खूब सौगात लाए हैं।

शिवम् तिवारी की दो कवितायें

घरों में बंद हैं!

मानव तूझको घमंड हैं,
अंतर्द्वंद्व प्रचंड हैं,
अपने आविष्कार पर,
चकाचौंध के विस्तार पर,
धरती को तूने रौंदा,
जल को किया गंदा,
वायु भी प्रदूषित कर,
जीव को तू खाता हैं,
किसी को मारने का,
क्या तूझे अधिकार हैं?
इसलिए आज तू,
घरों में बंद हैं!
समय है, सम्भल जा,
समझ जा, सम्भल जा,
अध्यात्म विज्ञान का मूल,
इसको तू समझ जा,
पश्चिम में बहन छोड़,
अब तू ठहर जा,
पुरातन की ओर लौट,
इशारे को समझ जा,
प्रकृति और मानव का,
यह भीषण द्वंद्व हैं,
इसलिए आज तू,
घरों में बंद हैं!

तूफान का आना जरूरी है

जब वृक्ष बड़ा हो जाता है,
शाखाएँ विनम्र हो झुकती हैं,
जो टहनी अकड़ में रहती है,
वह झोंको से ही गिरती है।

गगन चूमती कुछ मंजिल भी,
बुनियाद देख न पाती हैं,
जो बुनियादी कमजोर रहें,
वह धराशायी हो जाती हैं।

हम इंसानों की भी प्रवृत्ति यही,
मंजिल हमको मिल जाती हैं,
पर जिसमें भी अहंकार समाया,
न देर तलक टिक पाती हैं।

प्रकृति का स्वयं समायोजन,
उसकी यह मजबूरी है,
इसलिए आज के दौर में,
तूफान का आना जरूरी है।

विषमता की मक्खी

निर्मल ब्रह्मचारी

बस्ती में रहता नहीं
मस्ती में जीता नहीं
सुख से तो हूँ?
घूम-घूम करता हूँ
जूतों पर पालिश
घूम-घूम करता हूँ
निंदा-नालिश
भिन-भिना रही हैं
मक्खियां अस्थियों पर!

शरण

गुरु शर्मा, फ्रेदरिकस्ताद, नार्वे

आज प्रकृति कितनी नाराज़ है
अपने इंसान से
सज़ा मिल रही है उसे
कुदरत के खिलवाड़ से

मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा,
हर घर बंद किया भगवान ने
इतना ख़ौफ़ भर दिया
जगह भी ना मिले शमशान में

कितना लालची ज़ालिम और
बेरहम हो गया तेरा ये बंदा!
प्रकृति तेरी हर तस्वीर का
तिरस्कार करता रहा तेरा ये बंदा!

वन उपवन उजाड़ता,
पशु पक्षियों को मारता
हवाओ में ज़हर घोलता,
पर्वतों को तोड़ता
दूषित करता झरनों को नदियों को
तेरे दिए हर उपहार को पैरों तले है रौंदता

लेकिन कब तक तू भी सबर करती
जब बंजर हो रही थी तेरी ये धरती

लेकिन ये भी सच है तू दयावान है
आख़िर हर कोई तेरी हीं तो संतान है
प्रार्थना सुनले अपने डरे सहमे बच्चों की
ग़लतियाँ माफ़ कर दे अक्ल के कच्चों की

तू सब जगह व्याप्त है,
तुझसे ही सब कुछ मिलता है
तेरी मर्ज़ी के बिना तो
कोई पत्ता भी नहीं हिलता है !

शोभा बाजपेयी की चार कविताएं

डॉ. शोभा बाजपेयी, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी
बप्पा श्री नारायण वोकेशनल महाविद्यालय
(केकेवी डिग्री कॉलेज) लखनऊ विश्वविद्यालय

कोराना-वारियर

पापा आपने कहा था
वत्स तुम मत घबराना,
तुम्हारा कुछ नहीं करेगा करोना,
हिम्मत रखना।
तू चिकित्सक का बेटा है,
तुम्हारे संग पापा है ना।।१

आपने कहा थाः घर पर रहना,
मेरा इंतजार करना,
वत्स मुझे सेवा धर्म है निभाना,
युद्ध लड़कर है जीतना।
मास्क पहनना,
अपनी मां औ दादी का ख्याल रखना।।२

दादी कहती हैः नियति ने रची है
यह कैसी विडम्बना,
सूखे पत्तों को ही पहले चाहिए था
मुरझाना औ गिरना।
करोना को मुस्कुराते फूलों को
नहीं चाहिए था चुनना।।३

कवि कहते हैं- काल के कपाल पे
आप एक हस्ताक्षर थे,
मां तो हमेशा यही बताती थी
कि आप करोना वारियर थे।
मेरे लिए तो आप बस मेरे हीरो,
मेरी नौका के खेवनहार थे ।।४

दादी कहती हैः करते थे आप
सब लोगों का परित्राण,
लील गया वह दैत्य आपको भी,
ले लिए आपके प्राण।
मेरा दिल नहीं मानता
मेरा हीरो हो सकता है निष्प्राण।।५
दादी कहती हैः मेरा सर्जन बेटा
हर घाव जानता था सिलना
मां ने आइसोलेशन में जाने से पहले
की थी यही इक प्रार्थना,
हे भगवन! मेरे कंपित हुए घरौंदे को
अब और ना गिराना।।६

अब मेरी सुनो पापा मुझे कुछ भी नहीं
जानना ना सुनना,
ना दादी की बातें और
ना ही कवियों का यह तान तराना।
अब आप मेरे दिल को
और ना दहलाना, जल्दी आ जाना।।७

डिलीट मारना ही पड़ता है

फ्रेंड लिस्ट बढ़ती ही जा रही है
मेरे चाहने वालों में,
न चाहूं तो भी, मन मारके
डिलीट मारना ही पड़ता है।१

बड़ी मासूमियत होती है
उनकी बहकी बहकी बातें में,
बहक ही न जायें मेरा मन,
मन मारके फटकारना ही पड़ता है।२

अच्छे से मालूम है हम चल रहे हैं
सत्य की ही राह में,
मगर वक्तबेवक्त हथियार,
मन मारके डालना ही पड़ता है।३

किस्मत बुलंदी को छू जाये शायद,
इसे आज़माने में,
ऐरों गैरों की खुशामद,
मन मारके करना ही पड़ता है।४
सिंघासन औ सियासत गर आ जाये
प्यार औ मोहब्बत में,
भाई को भाई से घर-आंगन, मन मारके
बांटना ही पड़ता है।५

बेटियां केवल दायित्व नहीं

बेटियां केवल दायित्व नहीं,
वह पर्याय हैं अपनत्व का।
सृष्टि के सत्व का
मां के ममत्व का
शिखर चढ़ते स्वत्व का।।१

बेटियों पे अब कुदृष्टि नहीं
वह पर्याय हैं स्नेह वृष्टि का
पिता के गुरूर का
भाई के अभिमान का
दृष्टि के विस्तार का।।२

बेटियां केवल दायित्व नहीं
वो पर्याय हैं अपनत्व का।

बेटियां केवल सोन चिरैया नहीं
वह पर्याय हैं उड़ान का
नभ में गुंजन-भ्रमन का
वीरता और शौर्य का।
अंबर में लहराते ध्वज का।।३

बेटियां केवल दायित्व नहीं
वह पर्याय हैं अपनत्व का।

बेटियां केवल अबला कथा नहीं
वह पर्याय हैं कूटनीति का
कांधे पे उठाए सत्यवान का

मस्तक के सिंदूर का
असंभव में संभावना का।।४

बेटियां केवल दायित्व नहीं
वह पर्याय हैं अपनत्व का।

बेटियां केवल अश्रुधारा नहीं
वह पर्याय हैं करुणा का
धरा पर धैर्य धात्री का
रणभूमि पर चंडी का
शत्रु के समग्र संघार का।।५

बेटियां केवल दायित्व नहीं
वह पर्याय हैं अपनत्व का।

बेटियों से अब दुराव नहीं
वह पर्याय हैं सद्भाव का
प्रवाह सलिल भाव का
मलहम हर घाव का
संचार हैं संजीवनी का।।६

बेटियां केवल दायित्व नहीं
वह पर्याय हैं अपनत्व का।।

अद्भुत-परिचय

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।१

सतरंगी है चेहरा मोहरा, कैसा अद्भुत परिचय मेरा।
हर रिश्ते में घुल मिल जाती, पानी जैसा ढंग है मेरा।२

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।

जिन्हें डाटूं सुबो सबेरे, फिर भी करें सम्मान मेरा।
मीठी घुड़की से पाते, शिष्य सभी नित आशीष मेरा।।३

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।

गीतों में मैं होती मुक्त छंदा, घर में बन जाती वृंदा।
बच्चों में बच्ची बन जाती, चकोर संग चंचल चंदा।।४

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।

भीगी पलकों में गंगा जल, पंचामृत में तुलसी दल हूं।
अनजानों में अजब पहेली, मित्रों संग सहज सरल हूं।।५

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।

नौनिहालों में दुलार, सैनिकों में दुर्दम्य क्षमता सी हूं।
कुटुंब में भवमोचिनी, शारदे की दुर्गम्य दुहिता ही हूं।।६

परिचय अपना कैसे दूं मैं, किस रूप को मुखर करूं।
क्या छोड़ूं और किसे दिखाऊं, पल पल नये रूप धरूं।।

लॉकडाउन

प्रोमिला देवी

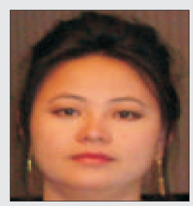

जहाँ छुट्टियों का माहौल रहें
जहाँ माँ अपने कर्तव्य से न परे
जहाँ पिता पूर्णतः कार्यरत रहकर भी
जहाँ कुटुंब का महत्व सही
यही है लॉकडाउन की एक कड़ी
एक नए दौर की शुरूवात- आ रही।

कहाँ हम व्यर्थ रोते थे-के ना अब
कहाँ मित्रों के मायने थे ना तब
कहाँ मिलकर - हँसी, ठहाके कभी
कहाँ स्वछंद भ्रमण कर पाए अभी
यही है लॉकडाउन की एक कड़ी
एक नए दौर की शुरूवात- आ रही।
ना मिल पा रहे
परिजनों को- जो हो मृत
ना ही सुन पा रहे
मंदिरों की स्तुति-ना मन अब तृप्त
ना ही अब कोई समारोह हो रही
ना मिलकर चाय के प्याले
पिए जा रहे अभी
यही है लॉकडाउन की एक कड़ी
एक नए दौर की शुरूवात- आ रही।

फिर भी आकांक्षा के पंछी हम
फिर भी उड़ें, फिर गिरें, ना मानें हार हम
फिर इक नयी प्रभात के इंतजार में
फिर इक नयी रुत, नयी श्याम में-
यही है लॉकडाउन की एक कड़ी
एक नए दौर की शुरूवात- आ रही।

अस्तित्व

सुवर्णा जाधव, पुणे

सब आज कहते तो है
नारी सब पे भारी है,
पर उसकी अपनी
अस्तित्व की तलाश
अभी भी जारी है।

नारी घिर जाती है
अपने ही बुने हुए कोश में
कभी माँ, चाची, मौसी और
कई अनगिनत रिश्तो में।

करती है कोशिश
सबका निखरे व्यक्तित्व
और निखरे उनका अस्तित्व
खुद का निखारेगी कब व्यक्तित्व ?
खुद का जाने की कब अस्तित्व?

खुद का अस्तित्व
पहचान 'सखी'
खुद के लिए भी
जी सखी।

इंसानियत

एस. डी. तिवारी, दिल्ली

माटी का बुत
जिसके पास नहीं
इंसानियत।

नहीं संजोते
सभी धन को रोते
इंसानियत।

पैसे के मोल
बेच देता इंसान
इंसानियत।

तलाश भाले वाले की

सूर्य कुमार पांडेय, लखनऊ

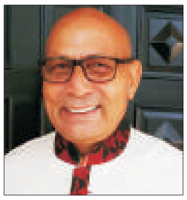

ऐसा भाला फेंको; जिसकी-
गति से दुश्मन आतंकित हो।

ऐसा भाला फेंको; पुतला-
अनाचार का भू-लुंठित हो।।

ऐसा भाला फेंको; जो रिपु-
दल के शिरस्त्राण को बेधे।

ऐसा भाला फेंको; मज़हब-
की, जो दीवारों को भेदे।।

ऐसा भाला फेंको; जिसकी-
नोंक विषमता में भय भर दे।

ऐसा भाला फेंको; नफ़रत-
की छाती जो छलनी कर दे।।

ऐसा भाला फेंको; मूरत-
जातिवाद की खंडित पाऊँ।

ऐसा भाला फेंको; जिसको-
कुटिल वक्ष पर अंकित पाऊँ।।

ऐसा भाला फेंको; जिसका-
लक्ष्य गरीबी उन्मूलन हो।

ऐसा भाला फेंको; जिससे-
भेद-भाव का अवमूल्यन हो।।

उस लुहार को ढूँढ रहा मैं,
धार गढ़े ऐसे भाले की।

और करे संधान; प्रतीक्षा-
है ऐसे भाले वाले की।।

तेरी मर्ज़ी के बिना तो
कोई पत्ता भी नहि हिलता है !

डा. गंगा प्रसाद 'गुणशेखर' की दो कवितायें

(कोरोना पीड़ित अस्पताल में)

कविता फिर कभी लिख लेंगे

जब कोई साला
हमारी साँसों का सौदा करने को आएगा तो
शब्द खोजेंगे कि हूल देंगे साले को
मौर शमशान में नहीं
मंडप में शोभा देता है
इसलिए अभी तो हरामियों को कालर
पकड़ -पकड़ के पेलो
कविता फिर कभी लिख लेंगे।

मौत का आजानु बाहु मसीहा

आधी रात के सन्नाटे में
मुस्कुराता हुआ
घूम रहा है
मौत का आजानु बाहु मसीहा
यह साफ़ साफ़ देख रहा है कि
सभी ने लड़ा है
अपने अपने हिस्से का भीतरी महाभारत
फिर भी यश अकेले ही लूटना चाहता है
उसकी पादुकाओं को पोंछ रहे हैं
सभी पत्रकार
लाशों के कवकों पर
छतरी ताने खड़ा
चुनावों का परिणाम भी बांच रहे है
जहाँ चुनाव संपन्न हो गए हैं
पसलियों के पहिए बता रहे हैं कि
कितना भागे हैं देह के रथ
रेमडेसिविर के लिए रात के बारह बजे
ब्रह्म राक्षसों से समझौते करते हुए
इसी समय मुक्तिबोध की फैंटेसी का
यही आजानू बाहु
श्मशान की भट्ठियों में
हाथ सेंकता हुआ
बंगाल में ऋषि का अवतार ले चुका था।

T-BANE TANKER

av Nuri Røsegg

Banen strekker seg
Byen stønner i mengden
Kropp presses på plass
Alle seter er opptatt
Etter rushtid er de skilt
Hus hoper seg opp
Midt mellom høstløv
Løk kjører bane
Hvit brun grå sort beige
Vinterjakkene luftes
Inne sitter hund
Varmekabler
Setter fri veien
Trofaste føtter
Snø jobber overtid
Dekker til Frøen
Natur venter barn
Veien ligger naken
Vår er ikke født
Keisersnitt venter
Sure folk
Er trofaste selv om
Blå scilla smiler.

Rosa

Inger Marie Lilleengen

Rosa den er noe helt for seg selv.
Den er symbolet på selveste kjærligheten.
Den legger du i din arbeidsbør.
Den du vandrer fra dør til dør.
Du går til gammel og til ung, og er den gledespreder.
Selv om dagen kan bli lang og tung.
Inger marie og rosens heder.
Under diktet hadde sjefen min skrevet navnet sitt.
Koselig minne.

Feil tid

Suresh Chandra Shukla

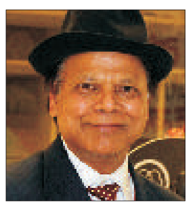

Jeg ser opptøyer i Afganistan.
Opprørende søker makt
og erobrer parlamentet.
Jeg ser motsetninger
mellom grupper i Sør Afrika.
Innvandrer-butikkene og lager
ble ranet av desperate folk.
Stortinget nektet å diskutere
om bonde protest i India.
De lager sine parlamentet på
Jantar-mantar i Delhi i India.
Et barn ropte etter mor:
"Kan jeg få mat
eller skal jeg få dø i fred?"
Er dette Somalia?
Er dette India?
Jeg ser at folk LIDER i dag
Har de kommet til feil horisont,
eller kommer vi til VERDEN til FEIL TID?

Ler Budha

Av Meena Murlidharan

Der er en morsom historie om Buddha som jeg vet. Jeg vet ikke hvis det er ekte eller bare myte. Jeg kan sjekke på google men jeg liker den historie mye så jeg vil bare skrive den.
Buddha var en veldig fredelig mann, han alltid underviste alle om hvordan kan vi har fred inne oss, hvordan kan vi takle stress i våre liv. Hvorfor har vi mange problemer og hva er løsning for dem. Hans Filosofi var veldig komplisert men veldig sterk.

Han alltid sa at han er bare en lærer eller veileder ikke gud. Han trodde ikke at der er en gud i himmel som har absolutt makt over oss og bestemmer alt. Han også sa at dette var hans egne meninger og det er ingen problem dersom vi er uenig med ham.
Uansett av hans filosofi og fred han sjelden lo. Han smilte alltid, men sjelden lo.
Det var en mann som var veldig tykk med stor magen. Han alltid lo på Buddha. Han sa at Buddhas filosofi var veldig dyp og fredelig, men han hadde en lettere løsning for alle problemer i livet.
Bare le hver dag en gang. Så han fått dette navn - Leende Buddha.
Mange boliger ha statuer av Leende Buddha med stor magen. Folk tenke at han bringer lykke til oss.
Jeg liker begge to av dem og jeg tenke at denne verden trenger begge av dem.
Mange personer i India møt hver morgen og ler så mye som mulig. De satte hendene i luften og le høyt. Dette kaller de latter klubb. Du kan prøve den løsning, bare le høyt en gang uten årsak, du skal liker det mye.
Vi hadde en slik klubb ved siden av mitt hus. Det var ikke morsomt for meg fordi jeg likte ikke når mange personer le ut høyt hver morgen kl 06:00 eller før og bråkte mye. Jeg trengte å sove litt lengre.

Regjeringen fortsetter gjenåpmningen

Retur, utvisning og bortvisningen fra Norge

Utlendinger som ikke har lovlig opphold, plikter i henhold til utlendingslovgivningen å forlate Norge. Utvisning og bortvisning er virkemidler myndighetene kan benytte for å nekte utlendinger innreise til eller opphold i Norge.

Plikten til å returnere gjelder personer med endelig avslag på søknad om beskyttelse eller annen oppholdstillatelse, personer som har mistet oppholdsgrunnlaget og personer som har kommet hit ulovlig og aldri har søkt om oppholdstillatelse.
Enkelte er også utvist, for eksempel på grunn av brudd på utlendingsloven eller på grunn av andre straffbare forhold, og har innreiseforbud. De som ikke overholder plikten til selv å forlate landet eller tilstås assistert retur, vil bli tvangsreturnert av politiet.
Raskere returer er en målsetning for Justis- og beredskapsdepartementet. Flere returer som gjennomføres raskt etter avslag, øker motivasjonen til å reise med assistert retur.
Rask retur er et viktig virkemiddel for å redusere antallet asylsøkere uten beskyttelsesbehov og vil virke forebyggende mot ulovlig opphold og andre former for kriminalitet.

Definisjoner

Ordinær retur

Ordinær (selvorganisert) retur er retur uten bistand fra norske myndigheter.
Hjemreisen organiseres og gjennomføres av utlendingen selv.

Assistert retur

Assistert retur er retur med bistand fra norske myndigheter for utlendinger uten lovlig opphold i Norge. Assistert retur kan i tillegg tilbys utlendinger som har en søknad om beskyttelse under behandling. Ved assistert retur kan utlendingen få hjelp til å anskaffe reisedokumenter, finansiert reise, samt ulike former for økonomisk stønad og bistand til reintegrering i hjemlandet. Assistert retur er finansiert og organisert av Utlendingsdirektoratet (UDI) gjennom tjenesteleverandør. (Per desember 2014 er International Organisation for Migration (IOM) hovedleverandør for denne tjenesten for norske myndigheter). Dersom det er forhold som forhindrer hjemreise, som for eksempel mangel på reisedokumenter, psykisk helsetilstand eller at leverandøren av returassistanse ikke har et tilbud i det aktuelle hjemlandet, kan politiet ledsage vedkommende (ledsaget retur).

Tvangsretur

Tvangsretur er uttransportering av utlendinger som ikke etterkommer pålegg om å forlate landet innen utresiefristen. Innenfor rammen av gjeldende rett kan politiet benytte pågripelse eller andre tvangsmidler når det er nødvendig for å sikre gjennomføring av en uttransport.

Utvisning og bortvisning fra Norge

Utvisning og bortvisning er virkemidler myndighetene kan benytte for å nekte utle-ndinger innreise til eller opphold i Norge.

Bortvisning

Bortvisning er et vedtak om å nekte en utlending adgang til Norge på grensen eller påby vedkommende å forlate landet.
En utlending kan bortvises for blant annet følgende forhold:

1. manglende eller mangelfullt reisedokument
2. manglende visum eller oppholds-tillatelse der dette er nødvendig

3. har utilstrekkelige midler til oppholdet og til hjemreisen
4. har innreiseforbud til Norge
5. er innmeldt i Schengen informasjonssystem. skylder det offentlige penger for tidligere uttransportering
De fleste vedtakene om bortvisning blir fattet av politiet, men også Utlendings-direktoratet kan fatte bortvisningsvedtak. Personer som er bortvist vil få adgang til Norge når bortvisningsgrunnlaget ikke lenger er til stede.

Utvisning

Det er forskjellige forhold som kan føre til utvisning. Den vanligste situasjonen er at en utlending blir utvist fordi vedkommende har begått en straffbar handling. Utvisning kan videre skje hvis utlendingen grovt eller gjentatte ganger har overtrådt en eller flere bestemmelser i utlendingsloven, eller unnlater å forlate landet når det er fattet vedtak om det. Vanlige overtredelser av utlendingsloven er ulovlig opphold, ulovlig arbeid og uriktige opplysninger.
Hvis hensynet til Norges sikkerhet gjør det nødvendig, blir også utvisning vurdert. Tilsvarende blir utvisning vurdert der en utlending har overtrådt straffelovens såkalte terrorbestemmelser som blant annet gjelder planlegging, forberedelse og finansiering av terrorisme. Det er i disse tilfellene ikke et krav om at utlendingen er straffedømt for overtredelsen.
En utlending som har eller fyller kravene til å få bosettingstillatelse kan bare utvises på grunn av mer alvorlige forbrytelser eller av hensyn til Norges sikkerhet. Personer som er født i Norge og siden uavbrutt har hatt fast bopel her, kan ikke utvises.
For utlending som omfattes av EØS-avtalen eller EFTA-konvensjonen er det også et utvidet vern mot utvisning. I disse tilfellene er det i utgangspunktet ikke avgjørende for utvisning om det er begått et straffbart forhold, men hvorvidt utlendingens personlige forhold innebærer en aktuell og tilstrekkelig alvorlig trussel mot grunnleggende samfunnsverdier.
En utlending kan ikke utvises hvis man etter en vurdering av forholdets alvor og vedkommendes tilknytning til riket, mener at utvisningen skaper en uforholdsmessig stor belastning for vedkommende selv eller for hans/hennes nærmeste familie. Som hovedregel kan man heller ikke utvise hvis utlendingen som følge av utvisningen blir sendt til et land hvor vedkommende risikerer å bli utsatt for forfølgelse.

Utvisningen medfører at utlendingen blir nektet adgang til Norge i en nærmere angitt tidsperiode. Innreiseforbudet kan gjøres varig eller tidsbegrenset, men som hovedregel ikke for et kortere tidsrom enn to år. Utvisning fra Norge innebærer som hovedregel også utestenging fra Schengen-området.
En utvist kan etter søknad få adgang til landet, men som hovedregel ikke tidligere enn to år fra utreisetidspunktet.

Tilpasser innreisekarantenereglene for film- eller serieproduksjoner

Regjeringen tilpasser innreisekarantenereglene for de som skal arbeide med film- eller serieproduksjon i Norge og som har fått tilsagn fra Norsk filminstitutt om tilskudd fra filminsentivordningen. Det gjøres for å gi nødvendig forutsigbarhet for å kunne planlegge for opptak i høst.

Film- eller serieproduksjonene må fortsatt forholde seg til de til enhver tid gjeldende innreiserestriksjonene, og innreise vil være avhengig av at man oppfyller kriteriene for unntak fra innreiserestriksjoner, eksempelvis fordi man har korona-sertifikat, reiser fra et "grønt" land eller har fått innreisetillatelse gjennom Sjøfartsdirektoratets søknadsbaserte ordning for innreise for utlendinger som gjør arbeid som er strengt nødvendig for å opprettholde aktivitet i norske virksomheter. Gitt at man får reist inn i landet, vil film- eller serieteamet ha et strengt smittevernregime i forbindelse med produksjonen:

1. Filmteamet må ha attest på negativ test før innreise, fylle ut innreiseregistreringsskjema og teste seg på grensen ved ankomst (i tråd med reglene for reisende fra røde land)
2. De skal ha full innreisekarantene (både i arbeidstiden og på fritiden) frem til de har testet negativt på en PCR-test tatt tidligst tre døgn etter ankomsten
3. De må gjennomføre innreisekarantenen på egnet oppholdssted hvor det er mulig å unngå nærkontakt med andre, med enerom, eget bad og eget kjøkken eller matservering.

Koronasituasjonen

28.07.2021: Usikkerhet rundt Delta-varianten og økt smittespredning både i Norge og internasjonalt gjør at regjeringen har besluttet å ikke iverksette trinn 4 i gjenåpningsplanen nå. En ny vurdering av om vi kan gå til trinn 4 vil skje i midten av august.

Helsedirektoratet og Folkehelseinstituttet har i sin anbefaling bedt regjeringen om å vurdere å utsette trinn 4 i to uker.

–Pandemien er ikke over. Det er en bekymringsfull utvikling i flere europeiske land som følge av Delta-varianten, også i land med høyere vaksinasjonsdekning enn i Norge, slik som Storbritannia og Nederland.
Det er knyttet usikkerhet til hvordan Delta-varianten vil slå ut i Norge når det gjelder smittespredning og sykdom. Regjeringen har derfor valgt å følge rådet fra Helsedirektoratet og FHI og ikke iverksette trinn 4 i gjenåpningsplanen nå, sier helse- og omsorgsminister Bent Høie.

Delta- varianten har i sommer tatt over som den dominerende varianten i Norge, og andelen som er smittet av denne varianten øker.

Helsedirektoratet og Folkehelseinstituttet peker i sitt oppdragssvar på at det særlig er utviklingen i Norge og internasjonalt de siste dagene som tilsier at gjenåpningen bør utsettes.

En normal skolehverdag

Gjennom hele pandemien har regjeringen prioritert barn og unge først. Nå er det svært viktig å legge til rette for at skolene kan åpne på grønt nivå ved skolestart. Det krever at vi har god kontroll på smittesituasjonen.

–Vi må gjøre det vi kan for at barn og unge kan starte med en normal skolehverdag etter ferien. En videre gjenåpning nå vil øke risikoen for at flere skoler må åpne på gult eller rødt nivå og dermed ramme barn og unge, sier Høie.

Det er likevel slik at barnehager, skoler og SFO i områder med mye smitte bør planlegge for gult nivå. Dette gjelder særlig barnehager og SFO, som åpner tidligere enn skolene i august.

Unge under 18 år slipper smittekarantene

TISK-strategien (testing, isolasjon, smittesporing og karantene) har vært blant de viktigste virkemidlene for å holde kontroll på pandemien i Norge. Disse tiltakene berører mange, både enkeltpersoner, kommunene, skoler, barnehager og arbeidslivet. Det er derfor viktig å justere tiltakene slik at de står i forhold til smittesituasjonen.

I dagens regelverk har ubeskyttede nærkontakter plikt til å være i smittekarantene i 10 døgn etter eksponering. Karantenetiden kan forkortes ved negativ PCR-test etter 7 døgn.

Fra 16. august vil barn og unge under 18 år bli unntatt plikt til smittekarantene, med unntak av husstandsmedlemmer eller tilsvarende nære kontakter til den smittete personen, som for eksempel en kjæreste. Unntaket gjelder bare hvis det gjennomføres testing i tråd med retningslinjer fra kommunen. Det vil bli utarbeidet en nasjonal veiledning om hvilket testregime kommunene bør ha. Hvis ikke testregimet gjennomføres har vedkommende plikt til karantene.
–Vi må unngå at mange barn og unge settes i karantene og får mye fravær når skolene åpner på grønt nivå. Siden det ikke vil være inndeling i kohorter på grønt nivå er det nødvendig å unnta dem under 18 år fra karanteneplikten, slik at ikke hvert enkelt smittetilfelle fører til fravær for mange og redusert skoledrift, sier Høie.
For personer over 18 år opprettholdes dagens plikt til smittekarantene, men kommunene får mulighet til å gjøre unntak og erstatte karantene med testing. Kommunene bør spesielt vurdere om elever i videregående skole som er over 18 år og ikke er beskyttet, kan unntas fra smittekarantene.

Mindre justeringer i trinn 3

Det gjennomføres noen mindre justeringer i trinn 3. Disse endringene trer i kraft fra midnatt, natt til mandag 2. august.

- I dag kan barn og unge delta på idretts- og kulturarrangementer, slik som kamper og stevner, på tvers av regioner og kretser. Nå blir det samme mulig også for voksne.
- Bedrifter og organisasjoner som ønsker å ha sosiale tilstelninger for sine ansatte, slik som kick-off-samlinger, må i dag forholde seg til reglene om private arrangementer. Dette innebærer strengere begrensninger på antall deltagere enn faglige samlinger. Slike tilstelninger blir nå definert som et offentlig arrangement. Det er en forutsetning at arrangementet skjer i regi av en ekstern aktør.
- Det gjøres unntak fra innreiserestriksjonene for mindreårige barn som reiser til Norge sammen med foreldre som har unntak fra innreiserestriksjonene på annet grunnlag enn koronasertifikat. Barn som reiser med foreldre som har unntak fra innreiserestriksjoner på grunnlag av koronasertifikat, har tidligere fått et slikt unntak, og kan i dag reise inn.
- Passasjerferger som seiler fra et grønt land til et land med karanteneplikt uten å ta om bord nye passasjerer, skal ikke regnes som offentlig transport etter covid-19-forskriftens regler om unntak fra innreisekarantene for reisende med kortvarig opphold i områder med karanteneplikt.

Justeringer i trinn 4 - iverksettes ikke nå

Selv om regjeringen ikke iverksetter trinn 4 nå, har det blitt besluttet noen mindre justeringer i trinn 4 utover det som er besluttet tidligere. Selv om disse ikke innføres nå, kommuniseres de ut for å skape forutsigbarhet for dem som blir berørt av endringene.

Dette er justeringene i trinn 4 i regjeringens plan for gradvis gjenåpning:

Det kan være opptil 500 personer på private arrangementer.

Krav til kohorter på inntil 500 beholdes på arrangementer med koronasertifikat.

I trinn 4 økes antall deltakere på aktivitetsleirer og andre fritidstilbud som samler mange personer og varer over flere dager, fra 300 til 500 personer. Anbefalt gruppestørrelse økes i den sammenheng fra 40 til 50 personer.

Universiteter, høyskoler og fagskoler kan ha fysisk undervisning med unntak fra avstandskravet under selve undervisningen.

For arrangementer er det besluttet følgende endringer i trinn 4:

Oppheve innslippstopp kl. 24.00 på arrangementer med skjenkebevilling.

Oppheve krav til bordservering av alkohol på arrangementer. Det kreves i stedet sitteplasser til alle dersom det skal serveres alkohol på arrangementer med skjenkebevilling, men ikke på arrangementer som benytter koronasertifikat.

Oppheve avstandskrav på arrangementer med koronasertifikat.

Oppheve krav til 1 meter avstand for ikke-profesjonelle utøvere på kulturarrangement.

Forskriftsfeste at beskyttede personer i samme følge kan sette seg nærmere hverandre etter ankomst på arrangement der fastmonterte seter benyttes.

Oppheve forbudet mot å sitte personer i mer enn halvparten av fastmonterte seter når man ikke kan holde 1 meter avstand i alle retninger.

Arrangørens plikt til å iverksette tiltak for å ivareta krav til avstand mellom deltakere skal gjelde også offentlige arrangementer uten bruk av faste, tilviste sitteplasser.

Endringer i innreiserestriksjoner, karantenekrav og krav om karantenehotell for flere land og områder

Regjeringen har besluttet at det gjøres endringer i innreiserestriksjonene og karantenekrav for flere regioner i Norden, flere land i Europa, samt enkelte tredjeland. Bakgrunnen er en oppdatert faglig vurdering fra FHI av smittenivået og å redusere faren for importsmitte. Alle endringene trer i kraft fra midnatt, natt til mandag 9. august.

Det sendes ut SMS-varsel til personer med norsk mobilabonnement som oppholder seg i de landene som medfører endrede innreiseregler ved ankomst i Norge.

Fraråder fortsatt reiser utenfor EØS/Schengen og Storbritannia

Utenriksdepartementet (UD) fraråder fortsatt alle reiser som ikke er strengt nødvendige for land utenfor EØS/Schengen og Storbritannia. Det er unntak for noen utvalgte land og områder på EUs tredjelandsliste, såkalte lilla land. Reiserådet til øvrige deler av verden gjelder til 1. september.

Land i Europa

Følgende land får innført innreiserestriksjoner og innreisekarantene:

Kroatia, Litauen, Vatikanstaten (disse landene går fra grønn til oransje)

Følgende land får i tillegg krav til karantenehotell:

Monaco (går fra rød til mørkerød)

Følgende land fortsetter å være grønne:

Bulgaria, Grønland, Latvia, Liechtenstein, Polen, Romania, Slovakia, Slovenia, Tsjekkia, Tyskland, Ungarn og Østerrike.

Følgende land fortsetter å være oransje eller røde eller går fra oransje til å bli røde (de samme reglene gjelder for oransje og røde):

Oransje: Belgia, Italia, San Marino og Sveits.

Røde: Estland (endret fra oransje), Frankrike, Færøyene, Hellas, Irland, Island (endret fra oransje), Luxembourg, Malta og Portugal.

Følgende land fortsetter å være mørkerøde:

Andorra, Kypros, Nederland, Spania og Storbritannia.

Regioner i Norden

De nordiske landene vurderes fortsatt inntil videre på regionalt nivå. Dette gjør vi hovedsakelig på grunn av at vi har tilstrekkelig datagrunnlag for en slik vurdering.

Sverige

Det gjøres endringer i åtte regioner i Sverige. Fire av disse går fra grønn til oransje eller rød og får dermed krav om innreiserestriksjoner og innreisekarantene.

Følgende regioner får innført innreiserestriksjoner og innreisekarantene:

Norrbotten (fra grønn til rød), Östergötland, Värmland og Västra Götaland (disse regionene går fra grønn til oransje).

Følgende regioner forblir grønne:

Blekinge, Dalarna, Gävleborg, Jämtland, Jönköping, Kalmar, Kronoberg, Södermanland, Uppsala, Västerbotten, Västernorrland, Västmanlandog Örebro.

Følgende regioner går fra oransje til å bli røde:

Gotland, Halland, Skåne og Stockholm.

Danmark

Region Nordjylland går fra oransje til rødt nivå. Dermed er det fortsatt innreiserestriksjoner og karantenekrav ved innreise fra alle regioner i Danmark (med unntak av Grønland).

Følgende regioner fortsetter å være oransje eller røde:

Hovedstaden (inkludert København) (rød), Midtjylland (rød), Nordjylland (fra oransje til rød), Sjælland (oransje) og Syddanmark (oransje).

Finland

Det gjøres endringer i innreiserestriksjoner og karantenekrav for seks regioner i Finland. I tillegg endres to regioner fra oransje til rødt.

Følgende regioner går fra grønn til oransje:

Norra Savolax SVD, Norra Österbottens SVD, Satakunta SVD, Södra Karelens SVD, Södra Savolax SVD og Åland.

Følgende regioner forblir grønne:

Mellersta Österbotten SVD, Östra Savolax SVD, Länsi-Pohja SVD, Syd-Österbottens SVD og Vasa SVD.

Følgende regioner fortsetter å være oransje eller røde eller går fra oransje til å bli røde:

Birkalands SVD (oransje), Centrala Tavastlands SVD (oransje), Egentliga Finlands SVD (fra oransje til rød), Helsingfors och Nylands SVD (fra oransje til rød), Kajanalands SVD (oransje), Kymmenedalens SVD (oransje), Lapplands SVD (oransje), Mellersta Finlands SVD (oransje), Norra Karelens SVD (oransje) og Päijat-Häme SVD (rød).

Utvalgte øygrupper i Europa

Enkelte øygrupper blir vurdert særskilt for å kunne legge til rette for trygg reising til øyer som er populære reisemål for nordmenn.

Det vil fortsatt være innreiserestriksjoner og karantenekrav fra alle de utvalgte øygruppene.

Følgende øygrupper forblir røde eller oransje, eller går fra oransje til rødt:

- Azorene, Portugal (rød)
- De joniske øyer, Hellas (rød)
- Kanariøyene, Spania (rød)
- Madeira, Portugal (oransje)
- Nordlige egeiske øyer, Hellas (fra oransje til rød)
- Sardinia, Italia (rød)
- Sicilia, Italia (fra oransje til rød)

Følgende øygrupper forblir mørkerøde:

- Balearene (Spania)
- Korsika (Frankrike)
- Kreta (Hellas)
- Sørlige egeiske øyer (Hellas)

Lilla land

FHI vurderer hvilke land og områder på EUs tredjelandsliste som har en smittesituasjon som gir grunnlag for noe mildere innreiseregler ved reiser til Norge, som å slippe karantenehotell.

Disse landene omtales som «lilla land». Se mer informasjon i faktaboksen nedenfor.

Disse landene og områdene kategoriseres ikke lenger som lilla:

Aserbajdsjan, Serbia og Qatar.

Disse landene og områdene forblir lilla:

Albania, Australia, Bosnia-Hercegovina, Canada, Kosovo, Moldova, New Zealand, Nord-Makedonia, Saudi Arabia, Singapore, Taiwan og Ukraina.

Vurderingen denne uken

Til grunn for endringene er Folkehelseinstituttets (FHI) ukentlige landvurdering av regioner i Norden, land og noen utvalgte øygrupper i Europa, i

tillegg til utvalgte tredjeland på EUs tredjelandsliste. Vurderingene tar utgangspunkt i de samme terskelverdiene som i EU.

Denne uken (oddetallsuke) er det vurdert om smittesituasjonen gjør det aktuelt å skjerpe inn på innreiserestriksjonene og karantenekravene. Beslutningen betyr at det innføres innreiserestriksjoner og karantenekrav for noen land og områder.

Dersom du reiser fra et grønt land eller område, men mellomlander i et land eller område med strengere karantenekrav (f.eks. oransje, rødt eller mørkerødt), er det innreisereglene fra landet eller området du mellomlander i som gjelder når du ankommer Norge. Det vil si at om du ikke er norsk statsborger og mellomlander i et land eller område som ikke er grønt, har du ikke rett til innreise i Norge.

Nye oppdateringer hver uke

FHI vurderer aktuelle land og områder ukentlig. I partallsuker gjøres det en bred vurdering basert på smittesituasjonen og om landene og områder skal gis lettelser eller skjerpelser. I oddetallsuker vurderes kun om smittesituasjonen tilsier at noen land skal få strengere regler (for eksempel gå fra grønt til oransje eller rødt).

Oppdateringer av landvurderingene offentliggjøres på regjeringen.no hver fredag ca. kl. 12, og endringene trer i kraft fra midnatt, natt til påfølgende mandag. Endringene fremgår av covid-19-forskriften og det interaktive kartet på FHI.no.

Dette er kravene til innreise og karantene fra 5. juli

- **Grønne land:** Det er ikke krav til testing før du reiser inn i Norge eller karantene. Man må fylle ut innreiseregistreringsskjema og teste seg på grensen ved ankomst. De som er bosatt i grønne land er unntatt innreiseforbudet til Norge.
- **Oransje land:** Reisende fra oransje land har samme regler som reisende fra røde land. Det kan imidlertid bli aktuelt å innføre egne krav for oransje land senere.
- **Røde land:** Det er begrenset hvem som har rett til å reise inn i Norge. De som har rett til å komme inn i Norge, må ha attest på negativ test før innreise, fylle ut innreiseregistreringsskjema, teste seg på grensen ved ankomst, og de må i innreisekarantene.
- **Mørkerøde land:** Samme innreiseregler som røde land, men i tillegg må deler av innreisekarantenen gjennomføres på karantenehotell.
- **Lilla land:** Besteforeldre, kjærester m.fl. fra disse landene får unntak for

innreiseforbudet. Det må søkes om forhåndssamtykke for innreise for kjærester når avreiselandet er lilla og innreisetillatelse kan bare benyttes mens landet er lilla. Les mer i dette rundskrivet. Ellers samme innreiseregler (karantene, test osv.) som røde land.

- **Øvrige land i verden:** Samme innreiseregler (karantenehotell, test osv.) som for mørkerøde land.

Er du fullvaksinert eller har gjennomgått covid-19 de siste seks månedene, og kan dokumentere det med et gyldig norsk eller europeisk koronasertifikat med QR-kode? Da kan du reise inn til Norge, du er unntatt innreisekarantene og trenger ikke å ha med attest på negativ test, fylle ut innreiseregistreringsskjema eller ta test på grensen. Dette gjelder uavhengig av hvilket land du kommer fra.

Les mer på siden «Hva gjelder for deg?» på helsenorge.no. Her står det også hvilke unntak som gjelder fra listen over, slik som at mindreårige har unntak for kravet til karantenehotell.

Kriteriene bak landvurderingene

Terskelverdiene for registrerte smittede, testing og folketall i europeiske land kommer fra Det europeiske smittevernbyrået (ECDC), som også er primær kilde for FHIs beregninger. Kriteriene tar utgangspunkt i tall per 100 000 innbyggere for de siste 14 dagene samt andel positive prøver. «Mindre enn 50 tilfeller» betyr derfor «Mindre enn 50 bekreftede tilfeller per 100 000 innbyggere for de siste 14 dagene».

- **Grønne land:** Mindre enn 50 tilfeller og under 4 % positive prøver, eller under 75 tilfeller og mindre enn 1 prosent positive prøver.
- **Oransje land:** Mindre enn 50 tilfeller og 4 % positive prøver eller mer, eller mellom 50 og 75 tilfeller og andel positive prøver på mer enn 1 prosent, eller mellom 75 og 200 tilfeller og mindre enn 4 prosent positive prøver.
- **Røde land:** Mellom 75 til 200 tilfeller og 4 prosent positive prøver eller mer, eller mellom 200 og 500 bekreftede tilfeller.
- **Mørkerøde land:** Dersom bekreftede tilfeller er 500 eller mer, eller det mangler nødvendige og pålitelige data for vurdering. Dersom det er særlige smittevernfaglige hensyn, som høy forekomst av særlig smittsomme virusvarianter, skal landet kategoriseres som mørkerødt uavhengig av andelen positive prøver.

En helthetlig vurdering kan medføre at land som kvalifiserer til grønt ut fra de objektive kriteriene, ikke blir grønne, men blir farget oransje eller rødt.

Hva er stortingsvalg?

Hvert fjerde år et det stortingsvalg. Da velger vi 169 kvinner og menn som skal sitte på Stortinget.

Demokrati

I Norge har vi demokrati. Det betyr at det er folket som bestemmer. I et stortingsvalg bestemmer folket hvem som skal sitte på Stortinget. De som sitter på Stortinget kaller vi stortingsrepresentanter. Å representere betyr å si noe eller å være til stede på vegne av andre.

Alle norske statsborgere over 18 år har stemmerett og kan stemme i stortingsvalg. Hvis du har bursdag etter valgdagen, kan du likevel være med å stemme.

Valget

I tiden før et stortingsvalg er det valgkamp. Da jobber de politiske partiene med å fortelle folk om hvilke saker som er viktig for dem. De håper at flest mulig vil stemme på partiet.

På valgdagen går de som skal stemme til et valglokale i nærheten av der de bor. Der går man inn bak en gardin og velger listen til det partiet man vil stemme på. Så legger man listen i en valgurne.

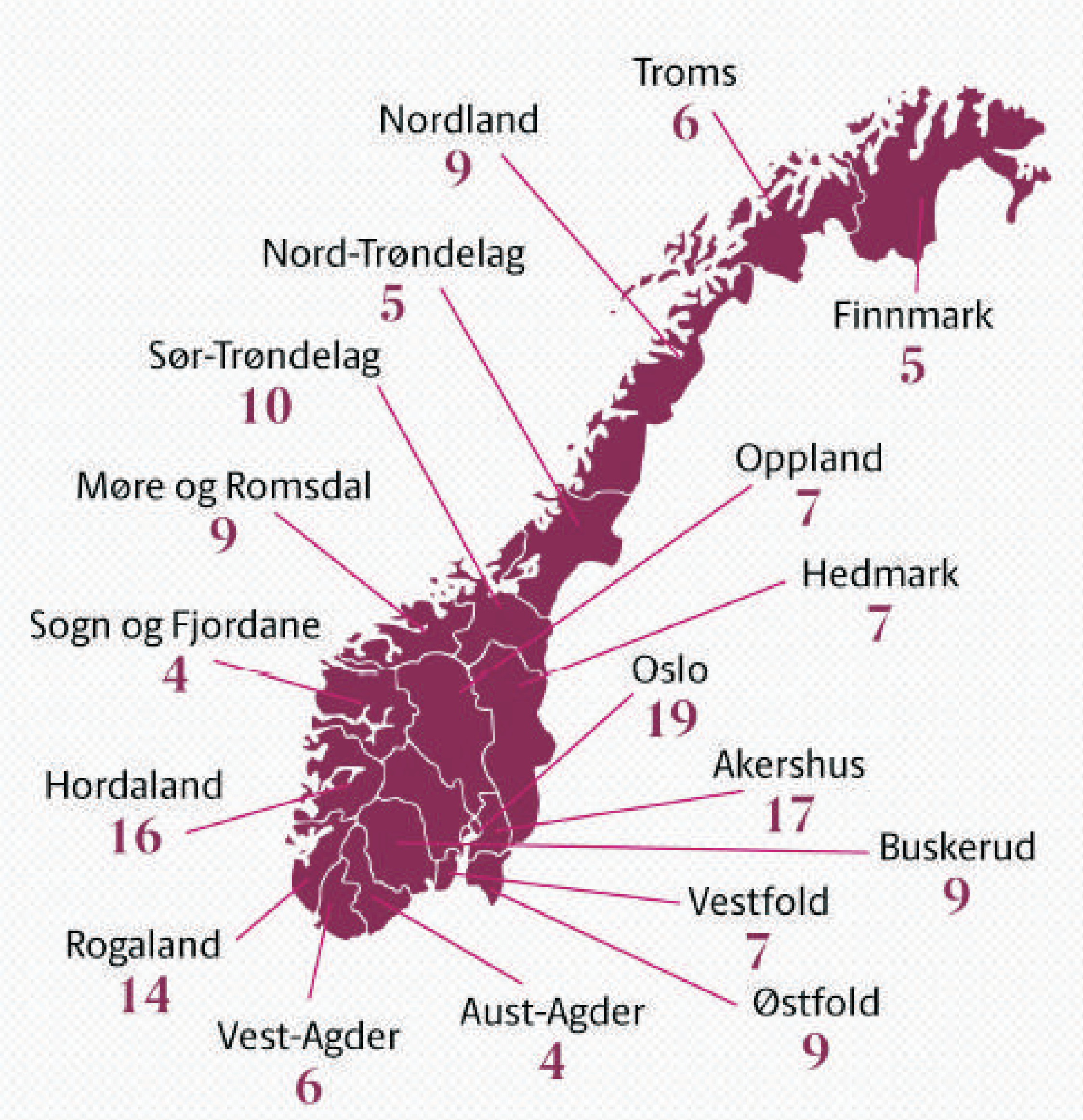

Husk at vi har hemmelig valg i Norge. Det betyr at ingen har krav på å vite hvilket parti man har stemt på.

Valgdistrikt

De som blir valgt kommer fra hele Norge. På kartet ser du hvor mange som blir valgt fra forskjellige områder i landet. Disse områdene kaller vi «valgdistrikt».

Ser du at det er store forskjeller mellom tallene? Det er fordi det er forskjell på hvor mange som bor der. er.

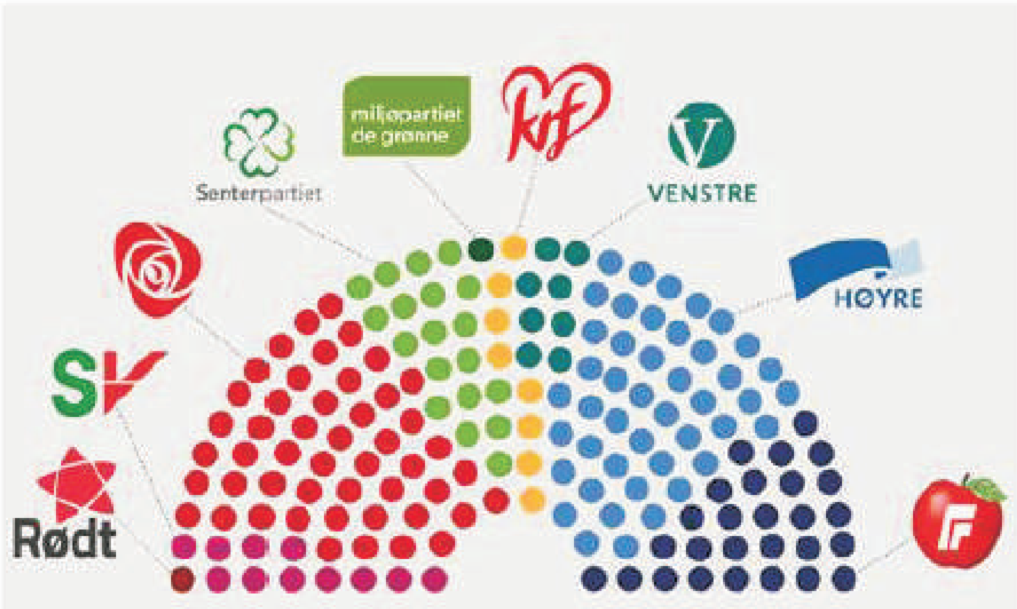

Her ser du hvor mange stortingsseter som gikk til hvert parti etter stortingsvalget i 2017. Illustrasjon: Stortinget.

Et nytt storting

Når valglokalene stenger, skal stemmene telles opp for å finne ut hvor mange stemmer de forskjellige partiene har fått. Jo flere stemmer, jo flere stortingsrepresentanter!

Til sammen velges det 169 stortingsrepresentanter. De neste fire årene skal disse 169 bestemme hvordan Norge skal styres. Dette er demokrati – folket bestemmer.

Hva med regjeringen

Når det nye Stortinget er på plass er det stortingsrepresentantens oppgave å bestemme hvilke partier som skal lage en regjering. Etter valget i 2017 fikk Erna Solberg sin regjering fortsette. Stortingsvalg er i september 2021. Følg med.

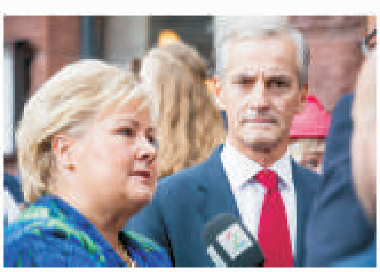

SV

Bruk din stemmerett! Godt valg!

Kulturnytt सांस्कृतिक समाचार

ओलम्पिक में चार स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य जीते नार्वे के खिलाड़ियों ने।
Fire gull, to sølv og to bronse er det Norge står igjen med etter årets sommer-OL i Tokyo.

Noen av medaljørene fra årets OL. F.h: Blummenfelt (gull), Jakob Ingebrigtsen (gull), Karsten Warholm (gull) og Kjetil Borch (sølv).
FOTO: STIAN LYSBERG SOLUM, HEIKO JUNGE / NTB

BRONSE: Håndballjentene med bronsemedaljen etter 36-19 seieren mot Sverige.
FOTO: STIAN LYSBERG SOLUM / NTB

1 gull, 2 sølv og 4 bronse: India avsluttes med den beste OL-medaljen noensinne i Tokyo.
एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक के साथ भारत का ओलम्पिक में श्रेष्ठ प्रदर्शन रहा।

SPEIL स्पाइल (दर्पण)

Speil støttet med midler fra Norsk Kulturråd
No. 1 2021 Stiftet 1988
अंक 1 2021 स्थापित 1988
ISSN 0802 4448

Address: Postbox 31, Veitvet
0518 Oslo
NORWAY

नार्वे में पार्लियामेन्ट चुनाव २०२१ Stortingsvalget 2021

कौन बनेगा प्रधानमंत्री? Hvem blir det nye statatsministeren?

अरबाइदर (लेबर) पार्टी के यूनास गाह्र स्तोयरे, प्रधानमंत्री अर्ना सूलबर्ग और सेन्टर (किसान) पार्टी के थ्रीग्वे स्लाग्सवोल्द वेदुम।
Jonas Gahr Støre, Erna Solberg og Trygve Slagsvold Vedum. Foto: NRK

पर्यावरण पार्टियाँ आगे बढ़ रही हैं। Miljø partier går frem.

एम दे गे नेता ऊने बास्तहोल्म, एस वे नेता आउदुन लीसबक्केन और आर पार्टी नेता ब्योर्नार मोक्सनेस।
MDG leder Une Bastholm, SV leder Audun Lysbakken og Rødt leder Bjørnar Moxnes.